JINA-VACHANA
जिन-वचन

RAMANLAL C. SHAH

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

JINA-VACHANA

जिन–वचन

COMPILED AND TRANSLATED

BY

RAMANLAL C. SHAH

PUBLISHERS

SHRI MUMBAI JAIN YUVAK SANGH

385, SARDAR V. P. ROAD

MUMBAI - 400 004

INDIA

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

JINA-VACHANA - A COLLECTION OF TEACHING OF BHAGAVAN MAHAVEER [ORIGINAL VERSES IN ARDHA-MAGADHI WITH TRANSLATIONS IN ENGLISH, HINDI AND GUJARATI.]

FIRST PUBLISHED — FEBRUARY 1995
SECOND EDITION — AUGUST 1995
THIRD EDITION — SEPTEMBER 1995
FOURTH REVISED EDITION — JULY 2003

COMPILED AND TRANSLATED BY
DR. RAMANLAL C. SHAH

COVER DESIGN — AARTI NIRMAL SHAH

PRICE : RS. 250.00

NO COPYRIGHT

PUBLISHED BY

SHRI MUMBAI JAIN YUVAK SANGH
385, SARDAR V. P. ROAD
MUMBAI - 400 004
INDIA

PRINTED BY
MUDRANKAN
D/57, GAUTAM NAGAR
LOKMANYA TILAK ROAD,
BORIVALI (WEST),
MUMBAI - 400 092. INDIA

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

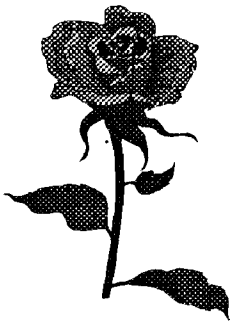

DEDICATED

TO

THE LOVING MEMORY

OF MY PARENTS

LATE SMT. REVABEN CHIMANLAL SHAH

LATE SHRI CHIMANLAL AMRITLAL SHAH

□ **RAMANLAL C. SHAH**

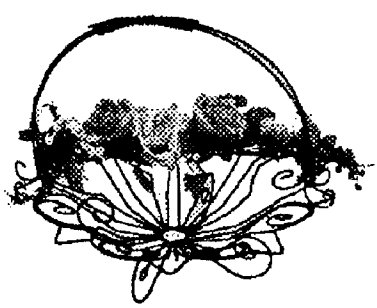

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

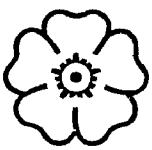

जइ इच्छह परम-पयं

अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे ।

ता तेलुक्कुधरणे

जिण-वयणे आयरं कुणह ।।

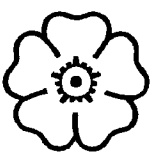

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

INDEX

[द=दसवैकालिक, उ=उत्तराध्ययन, सू=सूत्रकृतांग, आ=आचारांग, प्र=प्रश्न व्याकरण]

No.	Verse	No.	Verse
1.	धम्मो मंगलमुक्किट्ठं (द. 1-1)	30.	वरं मे अप्पा दंतो (उ. 1-16)
2.	से जाणमजाणं वा (द. 8-31)	31.	आहच्च सवणं लद्धुं (उ. 3-9)
3.	सोच्चा जाणइ कल्लाणं (द. 4-11)	32.	अप्पाणमेव जुज्झाहि (उ. 9-35)
4.	जावंति लोए पाणा (द. 6-9)	33.	जो सहस्सं सहस्साणं (उ. 9-34)
5.	गुणेहिं साहू अगुणेहिं ऽ साहू (द. 9 (3) - 11)	34.	जा जा वच्चइ रयणी (उ. 14-25)
6.	मुहुत्त दुक्खा हु हवंति कंटया (द. 9 (3) - 7)	35.	अप्पा कत्ता विकत्ता य (उ. 20-27)
7.	जा य सच्चा अवत्तव्वा (द. 7-2)	36.	अप्पा चेव दमेयव्वो (उ. 1-15)
8.	वत्थगंधमलंकारं (द. 2-2)	37.	न लव्वेज पुट्ठो सावज्जं (उ. 1-25)
9.	जेय कंते पिए भोए (द. 2-3)	38.	माणुस्सं विग्गहं लद्धुं (उ. 3-8)
10.	सव्वे जीवा वि इच्छंति (द. 6-10)	39.	सुइं च लद्धुं सुद्धं च (उ. 3-10)
11.	अप्पणट्ठा परट्ठा वा (द. 6-11)	40.	चउरंगं दुल्लहं मत्ता (उ. 3-20)
12.	वितहं पि तहामुत्तिं (द. 7-5)	41.	जहा लाभो तहा लोभो (उ. 8-17)
13.	तहेव फरुसा भासा (द. 7-11)	42.	सुवण्णरुपस्स उ पव्वया भवे (उ. 9-48)
14.	असच्चमोसं सच्चं च (द. 7-3)	43.	अप्पा नदी वेयरणी (उ. 20-36)
15.	तहेव काणं काणे त्ति (द. 7-12)	44.	खणमेत्तसोक्खा (उ. 14-13)
16.	कोहो पीइं पणासेइ (द. 8-37)	45.	शरीरमाहु नाव त्ति (उ. 23-73)
17.	कोहं माणं च मायं च (द. 8-36)	46.	अहिंसं सच्चं च अतेणयं च (उ. 21-12)
18.	उवसमेण हणे कोहं (द. 8-38)	47.	नाणेण जाणई भावे (उ. 28-35)
19.	अपुच्छिओ न भासेज्जा (द. 8-47)	48.	रागो य दोसो वि य कम्म बीयं (उ. 32-7)
20.	जरा जाव न पीलेई (द. 8-35)	49.	जहा य अंडप्पभावा बलागा (उ. 32-6)
21.	तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा (द. 7-54)	50.	तस्सेण मग्गो गुरु-विद्धसेवा (उ. 32-3)
22.	जयं चरे जयं चिट्ठे (द. 4-31)	51.	पाणीवह-मुसावाया (उ. 30-2)
23.	चित्तमंतमचित्तं वा (द. 6-13)	52.	आहच्च चंडालियं कडु (उ. 1-11)
24.	दिट्ठं मियं असंदिद्धं (द. 8-48)	53.	सोही उज्जुयभूयस्स (उ. 3-12)
25.	स-वक्कसुद्धि समुपेहिया मुणी (द. 7-55)	54.	एवं खु नाणिणो सारं (सू. 1-4-10)
26.	समया सव्वभूएसु (उ. 19-26)	55.	माणुसत्तम्मि आयायो (उ. 3-11)
27.	दंतसोहणमाइस्स (उ. 19-28)	56.	जे पावकम्मेहिं धणं मणुस्सा (उ. 4-2)
28.	चत्तारि परमंगाणि (उ. 3-1)	57.	अज्झत्थं सव्वओ सव्वं (उ. 6-6)
29.	नाणं च दंसणं चेव (उ. 28-3)	58.	न हु पाणवहं अणुजाणे (उ. 8-8)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

No.	Verse
59.	पंचिंदियाणि कोहं माणं (उ. 9-36)
60.	जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं (उ. 19-11)
61.	जहा कुम्मे सअंगाइं (सू. 1-8-16)
62.	वित्तं पसवो य नाइओ (सू. 2-3-16)
63.	सयं सयं पसंसंता (सू. 1-2-23)
64.	सयं तिवायए पाणे (सू. 1-1-3)
65.	साहरे हत्थपाए य (सू. 1-8-17)
66.	संबुज्झमाणे उ णरे मइमं (सू. 1-10-21)
67.	सव्वाहि अणुजुत्तीहि (सू. 1-11-9)
68.	पभू दोसे निराकिच्चा (सू. 1-11-12)
69.	ण कम्मुणा कम्म खवेन्ति (सू. 1-12-15)
70.	भासमाणो ण भासेज्जा (सू. 1-9-25)
71.	जो जीवे वि न याणति (द. 4-35)
72.	जो जीवे वि वियाणति (द. 4-36)
73.	जे य चंडे मिए थद्धे (द. 9-(2)-3)
74.	पढमं नाणं तओ दया (द. 4-33)
75.	सव्वे पाणा पियाउया (आ. 1-2-3)
76.	एक्कं पि बंभचेरे जंमिय (प्र. 4-1)
77.	पूयणट्ठा जसोकामी (द. 5-(2)-35)
78.	अबंभचरियं घोरं (द. 6-16)
79.	जहा कुक्कुड पोयस्स (द. 8-53)
80.	अप्पत्तियं जेण सिया (द. 8-47)
81.	विभूसा इत्थिसंसग्गी (द. 8-56)
82.	चित्तभित्तिं न निज्झाये (द. 8-54)
83.	आयावयाही चय सोगुमल्लं (द. 2-5)
84.	सुरं वा मेरगं वा वि (द. 5-(2)-36)
85.	हत्थपायपइच्छिन्नं (द. 8-55)
86.	खवेत्ता पूवकम्माइं (द. 3-15)
87.	जइ तं काहिसी भावं (द. 2-9)
88.	तेणे जहा संधिमुहे गहीए (उ. 4-3)
89.	कसिणं पि जो इमं लोयं (उ. 8-16)

No.	Verse
90.	अहे वयइ कोहेणं (उ. 9-54)
91.	दुमपत्तए पंडुयए जहा (उ. 10-1)
92.	कणकुंडगं जहित्ताणं (उ. 1-5)
93.	सद्दे रुवे य गंधे य (उ. 16-12)
94.	न तं अरी कंठछेत्ता करेइ (उ. 20-48)
95.	जहा सूणी पूइक्कणी (उ. 1-4)
96.	पुरिसो ! रम पावकम्मुणा (सू. 2-1-10)
97.	संबुज्झह किं न बुज्झह (सू. 2-1-1)
98.	दहरा बुड्ढाय पासह (सू. 2-1-2)
99.	जे य बुद्धा अतिक्कंता (सू. 1-11-36)
100.	जसं किर्त्तिं सिलोगं च (सू. 1-9-22)
101.	अहं पंचहि ठाणेहिं (उ. 11-3)
102.	सीह जहा खुड्डमिगा चरंता (सू. 1-10-20)
103.	वेराइं कुव्वइ वेरी (सू. 1-8-7)
104.	मणसा वयसा चेव (सू. 1-8-6)
105.	माइणो कट्टु माया (सू. 1-8-5)
106.	सव्वे सयकम्मकप्पिया (सू. 1-2-3-18)
107.	कामेहि य संथवेहि (सू. 1-2-1-6)
108.	अब्भागमितंमि वा दुहे (सू. 1-2-3-17)
109.	मा पच्छ असाहुया भवे (सू. 1-2-3-7)
110.	गमिणं जगई पुढो जगा (सू. 1-2-1-4)
111.	जे इह सायागुणा नरा (सू. 1-2-3-4)
112.	अधुवं जीवियं नच्चा (द. 8-34)
113.	सक्का सहेउं आसाए कंटया (द. 9-(3)-6)
114.	मुसावाओ य लोगम्मि (द. 6-12)
115.	न बाहिरं परिभवे (द. 8-30)
116.	अवण्णवायं च परम्मुहस्स (द. 9-(3)-9)
117.	तवतेणे वइतेणे (द. 5-(2)-46)
118.	तहेवं दहरं व महल्लगं वा (द. 9-(3)-12)
119.	समावयंता वयणाभिधाया (द. 9-(3)-8)
120.	अंग-पच्चंगसंठाणं (द. 8-57)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

No.	Verse	No.	Verse
121.	समाए पेहाए परिव्वयंतो (द. 2-4)	152.	निसन्ते सिया अमुहरी (उ. 1-8)
122.	आउक्खयं चेव अबुज्झमाणे (सू. 1-10-18)	153.	आलवंते लवंते वा (उ. 1-21)
123.	पणीयं भत्तपाणं तु (उ. 16-7)	154.	आणानिद्देसकरे (उ. 1-2)
124.	जहा बिडालावसहस्स मूले (उ. 32-13)	155.	जे आयरियउवज्झायाणं (द. 9-(2)-12)
125.	खेत्त वत्थुं हिरण्णं च (उ. 19-17)	156.	जहा अग्गिसिहा दित्ता (उ. 19-39)
126.	थावरं जंगमं चेव (उ. 6-6)	157.	जहा दुक्खं भरेउं जे (उ. 19-41)
127.	वालुयाकवले चेव (उ. 19-37)	158.	नापुट्ठो वागरे किंचि (उ. 1-14)
128.	जहा भुयाहिं तरिउं (उ. 19-42)	159.	मणगुत्तयाए णं भंते (उ. 29-53)
129.	जो सहस्सं सहस्साणं (उ. 9-40)	160.	वयगुत्तयाए णं भंते (उ. 29-54)
130.	दाराणि च सुया चेव (उ. 18-14)	161.	कायगुत्तयाए णं भंते (उ. 29-55)
131.	नीहरन्ति मयं पुत्ता (उ. 18-15)	162.	सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी (उ. 21-13)
132.	एगब्भूए अरण्णे वा (उ. 19-77)	163.	बहुं सुणेइं कण्णेहिं (द. 8-20)
133.	सव्वं जगं जइ तुहं (उ. 14-39)	164.	अत्थि एगं धुवं ठाणं (उ. 23-81)
134.	माया पिया ण्हुसा भाया (उ. 6-3)	165.	अलोलुए अक्कुहए (द. 9-(3)-10)
135.	जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं (उ. 14-27)	166.	मुसं परिहरे भिक्खू (उ. 1-24)
136.	जहा सूई ससुत्ता (उ. 29-59)	167.	समरेसु अगारेसु (उ. 1-26)
137.	कोहे माणे माया लोभे (प्र. भाष्य)	168.	अणुसासिओ न कुप्पेज्जा (उ. 1-9)
138.	पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि (आ. 1-3-3)	169.	मणपल्हाय जणणिं (उ. 16-4)
139.	रमए पंडिए सासं (उ. 1-37)	170.	विरई अबंभचेरस्स (उ. 19-29)
140.	संसयं खलु सो कुणई (उ. 9-26)	171.	जया कम्मं खवित्ताणं (द. 4-25)
141.	न वि मुंडिएणं समणो (उ. 25-31)	172.	जया जीवमजीवे या (द. 4-37)
142.	समयाए समणो होइ (उ. 25-32)	173.	रागो य दोसो वि य (उ. 32-7)
143.	जिणवयणे अणुरत्ता (उ. 36-259)	174.	तं ठाणं सासयं वासं (उ. 23-84)
144.	कोहविजएणं भन्ते (उ. 29-67)	175.	न रूय-लावण्ण-विलास हासं (उ. 32-14)
145.	माणविजएणं भन्ते (उ. 29-68)	176.	धम्मलद्धं मियं काले (उ. 16-8)
146.	मायाविजएणं भन्ते (उ. 29-69)	177.	बहुं खु मुणिणो भद्दं (उ. 9-16)
147.	लोभविजएणं भन्ते (उ. 29-70)	178.	तं देहवासं असुइं (द. 10-21)
148.	न चित्ता तायए भासा (उ. 6-11)	179.	चत्तपुत्तकलत्तस्स (उ. 9-15)
149.	सुणिया भावं साणस्स (उ. 1-6)	180.	न य वुग्गहियं कहं (द. 10-10)
150.	अमणुन्नसमुप्पायं (सू. 1-3-10)	181.	अहिंसं सच्चं च अतेणगं च (उ. 21-12)
151.	धम्मज्जियं च ववहारं (उ. 1-42)	182.	इमं च मे अत्थि (उ. 14-15)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

No.	Verse	No.	Verse
183.	जहा किंपागफलाणं (उ. 19-17)	194.	कसाया अग्गिणो वुत्ता (उ. 23-53)
184.	सल्लं कामा विसं कामा (उ. 9-53)	195.	निम्ममो निरहंकारो (उ. 19-90)
185.	अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ (उ. 13-31)	196.	लाभालाभे सुहे दुक्खे (उ. 19-91)
186.	असंखयं जीविय मा पमायए (उ. 4-1)	197.	परिजूरइ ते सरीरयं (उ. 10-21)
187.	दुल्लहे खलु माणुसे भवे (उ. 10-4)	198.	अबले जह भारवाहए (उ. 10-33)
188.	इह जीवियमेव पासहा (सू. 1-2-3-8)	199.	कुसग्गे जह ओसबिन्दुए (उ. 10-2)
189.	सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी (उ. 4-6)	200.	तिण्णो हु सि अण्णवं महं (उ. 10-34)
190.	जावन्त ऽ विज्जापुरिसा (उ. 6-1)	201.	समं च संथवं थीहिं (उ. 16-5)
191.	पडिणीयं च बुद्धाणं (उ. 1-17)	202.	उपलेवो होइ भोगेसु (उ. 25-39)
192.	चे केइ सरीरे सत्ता (उ. 6-11)	203.	लद्धूण वि उत्तमं सुइं (उ. 10-17)
193.	जरामरणवेगेणं (उ. 23-68)	204.	एवं भवसंसारे (उ. 10-15)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमस्कार महामंत्र

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोए सव्व साहूणं

एसो पंच नमुक्कारो

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवइ मंगलं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चत्तारि मंगलं

चत्तारि मंगलं
अरिहंता मंगलं
सिद्धा मंगलं
साहू मंगलं
केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं

चत्तारि लोगुत्तमा
अरिहंता लोगुत्तमा
सिद्धा लोगुत्तमा
साहू लोगुत्तमा
केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो

चत्तारि सरणं पवज्जामि
अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहू सरणं पवज्जामि
केवलि–पण्णतं धम्मं सरणं पवज्जामि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

JINA-VACHANA

जिन-वचन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्हद् - वक्त्र - प्रसूतं
गणधररचितं द्वादशाङ्गं विशालं ।
चित्रं बह्वर्थयुक्तं
मुनिगण - वृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भि : ॥
मोक्षाग्र - द्वार - भूतं
व्रत-चरण-फलं ज्ञेय-भाव-प्रदीपं ।
भक्त्या नित्यं प्रपद्ये
श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥

Religion is supremely auspicious. Non-violence, self-control and penance are its essentials. Even the gods bow down to him whose mind is always engaged in practising religion.

धर्म उत्कृष्ट मंगल है । अहिंसा, संयम और तप उस के मुख्य अंग हैं । जिस का मन सदा धर्म में लगा रहता है, उस को देव भी नमस्कार करते हैं ।

ધર્મ ઉત્કૃષ્ટ મંગલ છે. અહિંસા, સંયમ અને તપ એનાં મુખ્ય અંગ છે. જેનું મન હંમેશા ધર્મમાં લાગેલું રહે છે, તેને તો દેવો પણ નમસ્કાર કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मियं पयं ।
संवरे खिप्पमप्पाणं बीयं तं न समायरे ॥

If knowingly or unknowingly an irreligious act is committed, one should immediately withdraw one's self from it and should ensure that such an act is not committed again.

जाने-अनजाने में कोई अधर्म कार्य कर बैठे, तो अपनी आत्मा को उस से तुरन्त हटा ले । फिर दूसरी बार वैसा कार्य न करे ।

જાણતાં કે અજાણતાં કોઈ અધર્મ કાર્ય થઈ જાય તો પોતાના આત્માને એમાંથી તરત હટાવી લેવો. ત્યાર પછી બીજી વાર એવું કાર્ય ન કરવું.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणइ पावगं ।
उभयं पि जाणइ सोच्चं जं छेयं तं समायरे ॥

After listening to the scriptures, a person knows what is good and what is sinful. Thus, knowing both these through listening to the scriptures, one should practice what is beneficial.

धर्म सुनकर मनुष्य कल्याण क्या है यह जानता है और धर्म सुनकर ही पाप क्या है वह भी जानता है । इस तरह सुनकर ये दोनों जाने जाते हैं । उन में जो श्रेय है उसी का वह आचरण करे ।

ધર્મને સાંભળીને મનુષ્ય કલ્યાણકારી શું છે તે જાણે છે. વળી તે ધર્મને સાંભળીને પાપ શું છે તે જાણે છે. આમ ધર્મશ્રવણ દ્વારા તે બંનેને જાણીને જે શ્રેય હોય છે તેનું તેણે આચરણ કરવું.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जावंति लोए पाणा तस अदुव थावरा ।
तं जाणमजाणं वा न हणे न वि घायए ॥

Knowingly or unknowingly one should not kill animate or inanimate living beings in this world and should not cause them to be killed by others either.

इस लोक में जितने भी त्रस और स्थावर जीव हैं उन का जाने-अनजाने में साधक हनन न करे और न कराए ।

આ લોકમાં જેટલા ત્રસ જીવો અને સ્થાવર જીવો છે, તેને સાધક જાણતાં કે અજાણતાં હણે નહિ કે બીજા પાસે હણાવે નહિ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणेहिं साहू अगुणेहिं ऽ साहू
गेण्हाहि साहूगुण मुंच ऽ साहू ।
वियाणिया अप्पगमप्पएणं
जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ।

A Person becomes a monk by virtues and a non-monk by vices. Therefore, develop all the virtues and be free from all the vices. Know your self through the Self. He who maintains equanimity in all the matters of attachment and hatred becomes worthy of respect.

गुणों से साधु होता है और अगुणों से असाधु । इस लिए साधु-गुणों को (साधुता को) ग्रहण करो और असाधु-गुणों (असाधुता) का त्याग करो । आत्मा को आत्मा से जान कर जो राग और द्वेष में समभाव धारण करता है, वह पूजनीय हो जाता है ।

ગુણોથી સાધુ થવાય છે અને અવગુણોથી અસાધુ થવાય છે, માટે સાધુ-ગુણોને (સાધુતાને) ગ્રહણ કરો અને અસાધુગુણોનો (અસાધુતાનો) ત્યાગ કરો. આત્માને આત્મા વડે જાણીને જે રાગ તથા દ્વેષમાં સમભાવ ધારણ કરે છે તે પૂજનીય બને છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहत्तदुक्खा हु हवंति कंटया
अओमया ते वि तओ सुउद्धरा ।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि
वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥

When a sharp iron nail pricks the body, it can be easily removed; the pain does not last for a long time; but when a sharp nail in the from of hurtful words pricks, it cannot be easily removed; it creates enmity and generates fear.

लोहे का कांटा अल्प काल तक दु:ख-दायी होता है और वह शरीर से सहजतया निकाला जा सकता है । लेकिन दुर्वचनरूपी कांटा सहजतया नहीं निकाला जा सकता । वह वैर की परंपरा को बढ़ाता है और महाभयानक होता है ।

લોખંડનો કાંટો બે ઘડી દુ:ખ આપે છે અને તે શરીરમાંથી સહેલાઈથી કાઢી શકાય છે, પરંતુ કઠોર વાણીરૂપી કાંટો સહેલાઈથી કાઢી શકાતો નથી. તે વેરની પરંપરા વધારે છે અને મહાભયાનક હોય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जा य सच्चा अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा ।
जा या बुद्धेहि णाइन्ना न तं भासेज्ज पण्णवं ॥

A wise man should not use such a language that is true but not worth speaking, is a mixture of truth and untruth, is untrue and that has been disapproved by the enlightened persons.

जो भाषा सत्य हो किंतु अवक्तव्य हो, जो सत्य और असत्य के मिश्रणवाली हो, जो असत्य हो और जो भाषा बुद्धों द्वारा वर्ज्य हो वैसी भाषा प्रज्ञावान साधक न बोले ।

જે ભાષા સત્ય હોવા છતાં બોલવા જેવી ન હોય, જે ભાષા સત્ય અને અસત્યના મિશ્રણવાળી હોય, જે ભાષા અસત્ય હોય અને જે ભાષા જ્ઞાનીઓએ વર્જ્ય ગણી હોય તેવી ભાષા પ્રજ્ઞાવાન સાધકે બોલવી નહિ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वत्थगंधमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य ।
अच्छंदा जे न भुंजंति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥

He who is not able to enjoy clothes, cosmetics, ornaments, women and beds, because the circumstances do not permit him, is not called a renouncer.

वस्त्र, गंध, अलंकार, स्त्री और शयन-आसनों का उपभोग, जो संजोग के कारण नहीं करता वह त्यागी नहीं कहलाता ।

જેઓ વસ્ત્ર, સુગંધી પદાર્થો, અલંકારો, સ્ત્રી તથા શયનઆસનાદિનો ઉપભોગ સંજોગવશાત્ કરી શકતા નથી તેઓ ત્યાગી કહેવાતા નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे य कंते पिए भोए लद्धे विप्पिट्ठि कुव्वई ।
साहीणे चयई भोए से हु चाइ त्ति वुच्चई ॥

He, who has turned his back on all the available pleasing and dear objects of enjoyment and has voluntarily renounced them is a true renouncer.

मनोहर और प्रिय भोग उपलब्ध होने पर भी जो उनकी ओर से पीठ फेर लेता है और स्वाधीनतापूर्वक भोगों को छोड़ता है वही त्यागी कहलाता है ।

સરસ અને પ્રિય ભોગો ઉપલબ્ધ હોવા છતાં તેના તરફથી જે પીઠ ફેરવી લે છે અને સ્વાધીનતાપૂર્વક ભોગોનો ત્યાગ કરે છે તે જ ત્યાગી કહેવાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणिवहं घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥

All living beings desire to live. Nobody likes to die. Therefore self-restraining persons refrain from the great sin of killing living beings.

सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना नहीं । इस लिए निर्ग्रन्थ मुनि घोर प्राणीवध का परित्याग करते हैं ।

સર્વ જીવો જીવવા ઇચ્છે છે. કોઈ જીવને મરવું ગમતું નથી. એટલા માટે નિર્ગ્રન્થ મુનિઓ ભયંકર પ્રાણીવધનો પરિત્યાગ કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोहा वा जइ वा भया ।
हिंसगं न मुसं बूया नो वि अन्नं वयावए ॥

One should not, either through anger or through fear, lie or encourage others to lie, which may lead to violence, even if it is for the benefit of one's own self or that of someone else.

अपने या औरों के लाभ के लिए, क्रोध से या भय से ऐसा असत्य न बोला जाए या औरों से न बुलवाया जाए जिस से हिंसा हो ।

પોતાના કે બીજાના સ્વાર્થને માટે, ક્રોધથી કે ભયથી એવું અસત્ય વચન બોલવું નહિ અથવા બીજા પાસે બોલાવવું નહિ કે જેથી હિંસા થાય.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वितहं पि तहामुत्तिं जं गिरं भासए नरो ।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किं पुण जो मुसं वए ॥

It is sin to speak something which may appear like untruth. Then what to say about speaking obvious untruth ?

जो पुरुष असत्यभासी वचन बोलता है वह भी पाप है; तो फिर जो साक्षात् असत्य वचन बोलता है उस का तो कहना ही क्या ?

કોઈ માણસ અસત્ય ભાસે એવું વચન બોલે તો પણ તે પાપ ગણાય છે; તો પછી જે ખરેખર અસત્ય બોલે તેની તો વાત જ શી ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहेव फरुसा भासा गुरुभूओवधाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स आगमो ॥

One should not utter harsh language which may lead to killing, even if it is true, since it is sinful.

सत्य भाषा भी यदि कठोर और प्राणियों का बड़ा घात करने वाली हो तो न बोली जाए, क्यों कि इस से पाप-कर्म का बंध होता है ।

સત્ય ભાષા પણ જો કઠોર હોય અને પ્રાણીઓનો મોટો ઘાત કરનારી હોય તો તે બોલવી નહિ, કારણ કે એથી પાપકર્મ બંધાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असच्चमोसं सच्चं च अणवज्जमकक्कसं ।
समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पण्णवं ॥

A wise man should not speak such a language which is a mixture of truth and untruth. While uttering truth, he should use such a language which is sinless, delicate, unambiguous and well thought out.

प्रज्ञावान पुरुष असत्यामृषा (सत्य और असत्य के मिश्रण वाली) भाषा न बोले, और सत्य भाषा भी ऐसी बोले जो अनवद्य, मृदु, संदेह रहित और विचारपूर्ण हो ।

પ્રજ્ઞાવાન પુરુષે અસત્યામૃષા (સત્ય અને અસત્યના મિશ્રણવાળી ભાષા) ન બોલવી જોઈએ. વળી સત્ય ભાષા પણ પાપ વિનાની, અકર્કશ, સંદેહ રહિત અને બરાબર વિચારેલી એવી બોલવી જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहेव काणं काणे त्ति पंडगं पंडगे त्ति वा ।
वाहियं वा वि रोगी त्ति तेणं चोरे त्ति नो वए ॥

One should not call a one-eyed person one-eyed, an impotent person impotent, a diseased person diseased, or a thief a thief.

काने को काना, नपुंसक को नपुंसक, रोगी को रोगी और चोर को चोर न कहना चाहीअे ।

કાણાને કાણો, નપુંસકને નપુંસક, રોગીને રોગી અને ચોરને ચોર કહેવો ન જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ लोभो सव्वविणासणो ॥

Anger destroys love; ego destroys modesty; deceit destroys friendship and greed destroys everything.

क्रोध प्रीति का नाश करता है; मान विनय का नाश करता है; माया (कपट) मैत्री का नाश करती है और लोभ सर्व का नाश करता है ।

ક્રોધ પ્રીતિનો નાશ કરે છે; માન વિનયનો નાશ કરે છે; માયા-કપટ મિત્રતાનો નાશ કરે છે અને લોભ સર્વનો વિનાશ કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोहं माणं च मायं च लोभं च पाववड्ढणं ।
वमे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो ॥

Anger, ego, deceit and greed escalate sinful activities. Therefore those desirous of self-purification should avoid these four evils.

क्रोध, मान, माया और लोभ ये पाप को बढानेवाले हैं । अपनी आत्मा का हित चाहनेवाला इन चारों दोषों को छोड़ दे ।

ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ એ પાપને વધારનારાં છે. પોતાના આત્માનું હિત ઇચ્છનારે આ ચાર દોષોને છોડી દેવા જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे ।
मायं च ऽ ज्जवभावेण लोभं संतोसओ जिणे ॥

Destroy anger through calmness, overcome ego by modesty, discard deceit by straightforwardness and defeat greed by contentment.

उपशम से क्रोध को नष्ट करो, मृदुता से मान को जीतो, सरलता से माया (कपट) को दूर करो और संतोष से लोभ पर विजय प्राप्त करो ।

ઉપશમ દ્વારા ક્રોધને નષ્ટ કરો, મૃદુતા દ્વારા માનને જીતો, સરળતા દ્વારા કપટભાવને દૂર કરો અને સંતોષ વડે લોભ પર વિજય મેળવો.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपुच्छिओ न भासेज्जा भासमाणस्स अंतरा ।
पिट्ठिमंसं न खाएज्जा मायामोसं विवज्जए ॥

A wise man should not speak without being asked; he should not interrupt while his seniors are talking; he should not indulge in back-biting others and he should never tell a lie or hide something.

साधक बिना पूछे न बोले, गुरुजन बोलते हों तब बीच में न बोले, चुगली न खाए और कपटयुक्त असत्य बचन का त्याग करे ।

સાધકે વગર પૂછ્યે બોલવું નહિ, ગુરુજનો વાતચીત કરતા હોય તો વચ્ચે બોલવું નહિ, પીઠ પાછળ કોઈની નિંદા કરવી નહિ અને કપટયુક્ત અસત્ય વાણીનો ત્યાગ કરવો.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जरा जाव न पीलेई वाही जाव न वड्ढई ।
जाविंदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे ॥

A person should properly practise religion before old age afflicts, before diseases become chronic and before the senses become powerless.

जब तक बुढ़ापा नहीं सताता, जब तक रोग नहीं बढ़ता, और जब तक इन्द्रियाँ क्षीण नहीं होतीं तब तक धर्म का अच्छी तरह से आचरण कर लेना चाहिए ।

જ્યાં સુધી ઘડપણ સતાવતું નથી, જ્યાં સુધી વ્યાધિઓ વધતી નથી અને જ્યાં સુધી ઇન્દ્રિયોની શક્તિ ક્ષીણ નથી થઈ ત્યાં સુધી સારી રીતે ધર્માચરણ કરી લેવું.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा
ओहारिणी जा य परोवघायणी ।
से कोह लोह भयसा व माणवो
न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥

One should not speak, out of anger, greed, fear, ego or for the sake of humour, such words as may encourage sin, or derogate others or may be instrumental in killing others.

क्रोध, लोभ, भय, मान या मजाक में भी साधक सावद्य का अनुमोदन करनेवाली, अन्य का पराभव करनेवाली और अन्य का उपघात करनेवाली भाषा न बोले ।

ક્રોધ, લોભ, ભય, માન કે મજાક-મશ્કરીમાં એવી ભાષા ન બોલવી જોઈએ કે જે પાપને વખાણનારી હોય, બીજાનો પરાભવ કરવાવાળી હોય કે બીજાનો ઘાત કરનારી હોય.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए ।
जयं भुंजंतो भासंतो पावं कम्मं न बंधई ॥

Walk carefully, stand carefully, sit carefully, sleep carefully, eat carefully, and speak carefully so that no sinful act is committed.

यतना (जागरूकता) पूर्वक चलनेवाला, यतनापूर्वक खड़ा होनेवाला, यतनापूर्वक बैठनेवाला, यतनापूर्वक सोनेवाला, यतनापूर्वक भोजन करनेवाला और यतनापूर्वक बोलनेवाला पाप-कर्म का बंधन नहीं करता ।

જયણા (યતના) પૂર્વક ચાલવું, જયણાપૂર્વક ઊભા રહેવું, જયણાપૂર્વક બેસવું, જયણાપૂર્વક સૂઈ જવું, જયણાપૂર્વક ખાવું અને જયણાપૂર્વક બોલવું – એમ કરનાર પાપકર્મ બાંધતો નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं ।
दंतसोहणमेत्तं पि ओग्गहं सि अजाइया ॥
तं अप्पणा न गेण्हंति नो वि गेण्हावए परं ।
अन्नं वा गेण्हमाणं पि नाणुजाणंति संजया ॥

Persons with self-control do not take anything, whether animate or inanimate, whether small or big, not even a toothpick, without it being formally given to them. They do not ask others to do so and do not support others in doing so either.

संयमी पुरुष सजीव या निर्जीव, अल्प या अधिक, दंतशोधन जैसी तुच्छ वस्तु का भी, उस के मालिक की अनुज्ञा लिए बिना स्वयं ग्रहण नहीं करता, औरों से ग्रहण नहीं कराता और ग्रहण करनेवाले का अनुमोदन भी नहीं करता ।

સંયમી પુરુષો વસ્તુ સજીવ હોય કે નિર્જીવ હોય, થોડી હોય કે વધારે હોય, અરે ! દાંત ખોતરવાની સળી પણ હોય, તો પણ તેના માલિકને પૂછ્યા વિના લેતા નથી, બીજા પાસે લેવરાવતા નથી અને જો કોઈ એ રીતે લેતું હોય તો તેનું અનુમોદન પણ કરતા નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिट्ठं मियं असंदिद्धं पडिपुण्णं वियं जियं ।
अयंपिर-मणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं ॥

A person with self-control should speak exactly what he has seen. His speech should be to the point, unambiguous, clear, natural, free from prattle and causing no anxiety to others.

आत्मार्थी दृष्ट का यथार्थ कथन करनेवाली, परिमित, असंदिग्ध, प्रतिपूर्ण, स्पष्ट, सहज, वाचालता रहित, और अन्य को उद्वेग करनेवाली भाषा बोले ।

આત્માર્થીએ દૃષ્ટ વાતનું યથાર્થ નિરૂપણ કરતી, પરિમિત, અસંદિગ્ધ, પ્રતિપૂર્ણ, સ્પષ્ટ, સહજ, વાચાળતારહિત અને બીજાને ઉદ્વેગ ન કરે એવી વાણી બોલવી જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स-वक्कसुद्धिं समुपेहिया मुणी
गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया ।
मियं अदुट्ठं अणुवीई भासए
सयाण मज्झे लहई पसंसणं ॥

Knowing fully well the importance of pure language a monk should always avoid evil language. Even while using such flawless language, he should speak only adequate and thoughtful words. Such monks are praised even by saints.

वाक्यशुद्धि (भाषा की शुद्धि)को अच्छी तरह समझ कर मुनि दोषयुक्त वाणी का प्रयोग न करे । दोष रहित वाणी भी नपीतुली और सोचविचार कर बोलनेवाला मुनि, सत्पुरुषों में प्रशंसा को प्राप्त करता है ।

મુનિએ વાક્યશુદ્ધિ (ભાષાની શુદ્ધિ)ને બરાબર સારી રીતે સમજીને દુષ્ટ વાણીનો સદા ત્યાગ કરવો જોઈએ. દોષરહિત વાણી પણ માપસર અને વિચારીને બોલવી જોઈએ. આવું બોલનારા મુનિ સત્પુરુષોની પ્રશંસા પામે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समया सव्वभूएसु सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
पाणाइवायविरई जावज्जीवाए दुक्करं ॥

To practise equanimity towards all the persons in the world, whether a friend or an enemy, and to practise non-violence towards all the living beings, throughout one's life is very difficult.

शत्रु हो या मित्र, संसार के सभी जीवों के प्रति समभाव रखना और यावज्जीवन प्राणातिपात की विरति करना अत्यंत कठिन कार्य है ।

શત્રુ હોય કે મિત્ર, સંસારના સર્વ જીવો પ્રત્યે સમભાવ રાખવો અને જીવન પર્યંત કોઈપણ પ્રાણીની હિંસા ન કરવી એ ખરેખર દુષ્કર કાર્ય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दंतसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं ।
अणवज्जेसणिज्जस्स गेण्हणा अवि दुक्करं ॥

One should refrain from taking even a trifling thing like a toothpick without asking its owner. It is therefore very difficult to observe this rule of accepting only those things that are duly given and are free from blemish and really acceptable.

दंतशोधन आदि को बिना दिए न लेना और दत्त वस्तु भी वही लेना जो अनवद्य और एषणीय हो, इस व्रत का पालन करना बहुत कठिन है ।

દાંત ખોતરવાની સળી પણ તેના માલિકને પૂછ્યા વિના ન લેવી જોઈએ. એટલા માટે જ પોતાને રીતસર આપેલી હોય એવી વસ્તુઓ પણ અનવદ્ય અને એષણીય હોય તે જ લેવાના વ્રતનું પાલન કરવું એ ઘણું કઠિન છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो ।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमम्मि य वीरियं ॥

Four great things are very rare in this world for a living being : (1) Birth as a human being, (2) Listening to scriptures, (3) Faith in religion and (4) Energy to practise self-control.

इस संसार में जीवों के लिए चार परम बातें अत्यंत दुर्लभ हैं : (१) मनुष्य जन्म, (२) श्रुति अर्थात् शास्त्र-श्रवण, (३) धर्म में श्रद्धा और (४) संयमपालन में वीर्य अर्थात् आत्म-बल ।

આ સંસારમાં જીવને માટે ચાર પરમ વસ્તુઓ અત્યંત દુર્લભ છે : (૧) મનુષ્યજન્મ, (૨) શ્રુતિ એટલે શાસ્ત્રશ્રવણ, (૩) ધર્મમાં શ્રદ્ધા અને (૪) સંયમપાલન માટે વીર્ય એટલે આત્મબળ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एयं मग्गमणुप्पत्ता जीवा गच्छंति सोग्गइं ॥

Human beings who are on the path of Knowledge, Faith, Character and Penance are on the path of true destiny.

ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप—इस मार्ग पर चलनेवाले जीव सुगति को प्राप्त करते हैं ।

જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને તપના માર્ગને અનુસરનારા જીવો સુગતિ પ્રાપ્ત કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरं मे अप्पा दंतो संजमेण तवेण य ।
मा हं परेहि दम्मंतो बंधणेहिं वहेहिं य ॥

It is better that I should restrain myself by self-control and penance rather than being subdued by others with fetters and violence.

संयम और तप के द्वारा मैं अपनी आत्मा का दमन करूं यही अच्छा है । अन्य लोग बंधन और वध के द्वारा मेरा दमन करें – इस से यह अच्छा है ।

સંયમ અને તપથી હું મારા આત્માનું દમન કરું એ જ ઉત્તમ છે. બીજા લોકો બંધનમાં નાખીને કે વધ કરીને મારા આત્માને દમે તેના કરતાં આ સારું છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहच्च सवणं लद्धुं सद्धा परम दुल्लहा ।
सोच्चा णेयाउणं मग्गं बहवे परिभस्सई ॥

Even after getting an opportunity to hear religious discourses, it is very difficult to have faith in religion. There are many who get lost even after being shown the right path.

कदाचित् धर्मश्रवण का अवसर पा लेने पर भी उस में श्रद्धा होना परम दुर्लभ है । धर्म की ओर ले जानेवाले सही मार्ग को जानकर भी बहुत लोग इस मार्ग से भ्रष्ट हो जाते हैं ।

સંજોગવશાત્ ધર્મશ્રવણની તક મળવા છતાં ધર્મતત્ત્વમાં શ્રદ્ધા થવી એ પરમ દુર્લભ છે. સાચા ધર્મમાર્ગ વિશે જાણવા મળે છતાં ઘણા માણસો તે માર્ગથી ભ્રષ્ટ થઈ જાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण बज्झओ ।
अप्पाणमेव अप्पाणं जइत्ता सुहमेहए ॥

Why are you fighting with external enemies ? Fight with your own self. One who conquers one's own self enjoys true happiness.

आत्मा के साथ ही युद्ध करो । बाहरी शत्रुओं से युद्ध करने से क्या लाभ ? आत्मा को आत्मा के द्वारा जीतनेवाला मनुष्य सुख पाता है ।

શા માટે બહારના શત્રુઓ સાથે યુદ્ધ કરો છો ? પોતાના આત્માની સાથે જ યુદ્ધ કરો. જે આત્મા વડે આત્માને જીતે છે તે સાચું સુખ પામે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस मे परमो जओ ॥

In war a man may defeat a million invincible enemies but conquering one's own self is the greatest victory.

जो मनुष्य दुर्जेय संग्राम में दस लाख योद्धाओं को पराजित करे, इस की अपेक्षा कोई अपने आप को जीते यही परम विजय है ।

દુર્જેય સંગ્રામમાં દસ લાખ શત્રુઓને માણસ હરાવે તેના કરતાં પોતાના આત્મા ઉપર વિજય મેળવે એ જ પરમ વિજય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
धम्मं च कुणमाणस्स सफला जंति राइओ ॥

The nights which pass do not return. The nights of a religious person are successful.

जो जो रातें गुज़र जाती हैं, वे लौट कर नहीं आतीं । धर्म करनेवाले की रात्रियाँ सफल होती हैं ।

જે જે રાત્રિઓ વીતી જાય છે, તે પાછી આવતી નથી. ધર્મનું આચરણ કરનાર મનુષ્યની રાત્રિઓ સફળ થાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पा कत्ता विकत्ता य दुक्खाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥

The soul is the architect of one's happiness and unhappiness. Therefore, the soul on the right path is one's own friend and a soul on the wrong path is one's enemy.

आत्मा स्वयं ही दु:ख और सुख की कर्ता है और उन का क्षय करनेवाली भी है । इस लिए सन्मार्ग पर चलनेवाली आत्मा मित्र है और उन्मार्ग पर चलनेवाली आत्मा शत्रु है ।

આત્મા પોતે જ પોતાનાં સુખદુ:ખનો કર્તા છે અને એનો નાશ કરનાર પણ છે. એટલા માટે સન્માર્ગે ચાલનારો આત્મા મિત્ર છે અને કુમાર્ગે ચાલનારો આત્મા શત્રુ છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पा चेव दमेयव्वो अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दंतो सुही होई अस्सिं लोए परत्थ य ॥

The self alone should be restrained, because it is most difficult to restrain the self. He who has restrained his self becomes happy in this world as well as in the next world.

अपनी आत्मा का ही दमन करना चाहीए, क्योंकि आत्मा ही दुर्दम्य है । अपनी आत्मा पर विजय पानेवाला ही इस लोक और परलोक में सुखी होता है ।

પોતાના આત્માને જ દમવો જોઈએ, કારણ કે આત્મા જ દુર્દમ્ય છે. આત્મા ઉપર વિજય મેળવનાર જ આ લોકમાં અને પરલોકમાં સુખી થાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरत्थं न मम्मयं ।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्संतरेण वा ॥

Even when asked by some one, a monk should not utter, for his own sake or for the sake of others or for the sake of both, sinful words, senseless words or heart-rending words.

किसी के पूछने पर भी साधु अपने लिए, अन्य के लिए या दोनों के लाभ के लिए भी सावद्य वचन न बोले, निरर्थक वचन न बोले और मर्मभेदी वचन न बोले ।

કોઈ પૂછે ત્યારે પણ સાધુએ પોતાના સ્વાર્થ માટે, બીજાના સ્વાર્થ માટે કે બંનેના સ્વાર્થ માટે પાપવચન ન બોલવું જોઈએ, નિરર્થક વચન ન બોલવું જોઈએ કે બીજાના હૃદયના મર્મને ભેદે એવું વચન ન બોલવું જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणुस्सं विग्गहं लद्धुं सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्च पडिवज्जंति तवं खंतिमाहिंसयं ॥

Even after having been born as a human being, it is most difficult to get an opportunity to listen to true religious scriptures - listening to which makes one practise penance, forgiveness, and non-violence.

मनुष्य देह प्राप्त होने पर भी उस धर्म का श्रवण दुर्लभ है जिस को सुनकर मनुष्य तप, क्षमा और अहिंसा को अपना सके ।

મનુષ્યદેહ પામ્યા પછી પણ સાચા ધર્મનું શ્રવણ દુર્લભ છે કે જે ધર્મને સાંભળવાથી જીવો તપ, ક્ષમા અને અહિંસાને અપનાવી શકે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुइं च लद्धुं सुद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं ।
बहवे रोयमाणा वि नो य णं पडिवज्जई ॥

Even after hearing the sacred scriptures and having firm faith in them, it is very difficult to have enough strength to practise self-control. There are many who are interested in it, but are not able to do so for want of strength.

धर्मश्रवण करने पर और उस में श्रद्धा प्राप्त होने पर भी संयमपालन में पुरुषार्थ होना अत्यंत दुर्लभ है । धर्म में रुचि रखते हुए भी कई लोग उस के अनुसार आचरण नहीं करते ।

ધર્મશ્રવણની તક મળ્યા પછી અને એમાં શ્રદ્ધા થયા પછી પણ સંમયના આચરણ માટેનો પુરુષાર્થ તો દુર્લભ જ છે. ઘણા જીવો ધર્મમાં રુચિ ધરાવતા હોવા છતાં તેને આચરી શકતા નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउरंगं दुल्लहं मत्ता संजमं पडिवज्जिया ।
तवसा धुयकम्मंसे सिद्धे हवइ सासए ॥

Realizing that four things (viz human birth, listening to scriptures, faith in religion and strength to practise self-control) are difficult to obtain, one who observes self-control and destroys all the past Karmas through penance, becomes Siddha for ever.

चार अंगों (मनुष्यजन्म, शास्त्रश्रवण, धर्म में श्रद्धा और संयम में पुरुषार्थ) को दुर्लभ समझ कर जीव संयम का स्वीकार करता है । फिर तपस्या द्वारा सभी कर्मों को नष्ट कर जीव शाश्वत सिद्धपद प्राप्त करता है ।

ચાર અંગો (મનુષ્યજન્મ, શાસ્ત્રશ્રવણ, ધર્મમાં શ્રદ્ધા અને સંયમમાં પુરુષાર્થ) દુર્લભ જાણીને જીવ સંયમધર્મનો સ્વીકાર કરે છે અને તપ દ્વારા કર્મોનો નાશ કરીને શાશ્વત સિદ્ધપદને પામે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा लाभो तहा लोभो लाभा लोभो पवड्ढई ।
दोमासकयं कज्जं कोडीए वि न निट्ठियं ॥

Where there is gain, there is greed; greed grows as one gains more. A work which could have been done with two grams of gold is then not done even with ten million grams of gold.

जैसे जैसे लाभ होता है वैसे वैसे लोभ होता है । लाभ से लोभ बढ़ता है । दो मासे सोने से पूर्ण होनेवाला कार्य करोड़ से भी पूर्ण नहीं होता ।

જેમ જેમ લાભ થાય તેમ તેમ લોભ થાય છે. લાભથી લોભ વધતો જાય છે. બે માસા સોનાથી જે કામ પાર પડી શકે, તે કામ કરોડથી પણ પૂરું થતું નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुवण्णरुप्पस्स उ पव्वया भवे
सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि
इच्छा हु आगाससमा अणन्तिया ॥

A greedy person is not satisfied even if he accumulates gold and silver worth numerous Kailas mountains because desire, like the sky, is endless.

कदाचित् सोने और चांदी के कैलास पर्वत समान असंख्य पर्वत मिल जाएँ तो भी लोभी मनुष्य को संतोष नहीं होता, क्योंकि इच्छा आकाश के समान अनंत है ।

લોભી માણસને કદાચ કૈલાસ પર્વત જેવા સોના અને ચાંદીના અસંખ્ય પર્વત મળી જાય તો પણ તેને સંતોષ થતો નથી, કારણ કે ઇચ્છા આકાશની જેમ અનંત છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पा नदी वेयरणी अप्पा मे कूडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू अप्पा मे नंदणं वणं ॥

The soul itself is the river Vaitarani. The soul is a Kutashalmali tree. The soul is Kama-duha (wish-fulfilling) cow and the soul is the Nandanavana (a park in paradise).

आत्मा ही वैतरणी नदी है और आत्मा ही कूटशाल्मली वृक्ष है । आत्मा ही कामदुधा धेनु है और आत्मा ही नंदनवन है ।

આત્મા પોતે જ વૈતરણી નદી છે. આત્મા જ કૂટશાલ્મલી વૃક્ષ છે. આત્મા જ કામદુધા ગાય છે અને આત્મા જ નંદનવન છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा
पकामदुक्खा अनिकाम सोक्खा ।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥

Sensuous pleasures give temporary happiness but bring unhappiness for a long time; they give more unhappiness than happiness. They are great hindrances to emancipation and they are really a mine of misfortunes.

कामभोग क्षण मात्र सुख और चिरकाल दु:ख देनेवाले हैं, बहुत दु:ख और कम सुख देनेवाले हैं. कामभोग संसारमुक्ति के शत्रु हैं और अनर्थों की खान हैं ।

કામભોગો ક્ષણ માત્ર સુખ આપનારા અને બહુકાળ દુ:ખ આપનારા છે, ઘણું દુ:ખ અને થોડું સુખ આપનારા છે. કામભોગો સંસારમુક્તિના શત્રુરૂપ છે અને અનર્થોની ખાણ છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शरीरमाहु नाव त्ति जीवो वच्चइ नाविओ ।
संसारो अण्णवो वुत्तो जं तरंति महेसिणो ॥

The body is called a boat; the soul is called a navigator; worldly life is called an ocean. The great sages cross this ocean.

शरीर को नौका, जीव को नाविक और संसार को समुद्र कहा गया है । महर्षि इसे तैर जाते हैं ।

શરીરને નાવ કહી છે. જીવને નાવિક કહ્યો છે. સંસારને સમુદ્ર કહ્યો છે. મહર્ષિઓ એને તરી જાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिंसं सच्चं च अतेणयं च
तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च ।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाइं
चरेज्ज धम्मं जिणदेसियं विदू ॥

A learned monk having adopted the five great vows of non-violence, truthfulness, non-stealing, celibacy and non-possessivenss should practise the religion preached by the Jineshwara.

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह—इन पांच महाव्रतों को अपना कर विद्वान मुनि जिनेश्वर कथित धर्म का आचरण करे ।

અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય, અને અપરિગ્રહ—આ પાંચ મહાવ્રતોને અંગીકાર કરીને વિદ્વાન મુનિએ જિનેશ્વરોએ ઉપદેશેલા ધર્મનું આચરણ કરવું.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सद्दहे ।
चरित्तेण न गिण्हाई तवेण परिसुज्जई ॥

One knows the nature of substances through Knowledge, keeps faith in them by right Darshan, develops self-control by right Conduct and purifies the soul by Penance.

मनुष्य ज्ञान से पदार्थों को जानता है, दर्शन से श्रद्धा करता है, चारित्र से निग्रह करता है और तप से परिशुद्ध होता है ।

મનુષ્ય જ્ઞાનથી પદાર્થને જાણે છે, દર્શનથી શ્રદ્ધા રાખે છે, ચારિત્રથી નિગ્રહ કરે છે અને તપથી પરિશુદ્ધ થાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रागो य दोसो वि य कम्म बीयं
कम्मं च मोहप्पभवं वदंति ।
कम्मं च जाई-मरणस्स मूलं
दुक्खं च जाई-मरणं वयंति ॥

Attachment and hatred are seeds of Karma. Karma originates from delusion. Karma is the root cause of birth and death. Birth and death are called unhappiness.

राग और द्वेष, कर्म के बीज हैं । कर्म मोह से उत्पन्न होता है । कर्म जन्म-मरण का मूल है । जन्म-मरण को दु:ख कहा गया है ।

રાગ અને દ્વેષ એ બંને કર્મનાં બીજરૂપ છે. કર્મ મોહથી ઉત્પન્ન થાય છે. કર્મ જન્મ-મરણનું મૂળ છે. જન્મ-મરણને દુ:ખ કહેવામાં આવે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा य अंडप्पभावा बलागा
अंडं बलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहायतणं खु तण्ह
मोहं च तण्हायतणं वयंति ॥

Just as an egg gives birth to a crane and a crane lays an egg, in the same way delusion gives birth to desire and desire gives birth to delusion. This is said by the wise people.

जिस प्रकार बलाका अण्डे से उत्पन्न होती है और अण्डा बलाका से उत्पन्न होता है उसी प्रकार तृष्णा मोह से उत्पन्न होती है और मोह तृष्णा से उत्पन्न होता है । ज्ञानी पुरुषों ने ऐसा कहा है ।

જેમ ઈંડામાંથી બગલી જન્મે છે અને બગલીમાંથી ઈંડું જન્મે છે તેમ મોહમાંથી તૃષ્ણા જન્મે છે અને તૃષ્ણામાંથી મોહ જન્મે છે. જ્ઞાની પુરુષો એમ કહે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्सेण मग्गो गुरु-विद्धसेवा
विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झाय एगंत निसेवणा य
सुत्तत्थसचिंतणया धिती य ॥

To serve the teacher and old people, to keep away from the company of ignorant people, to study the scriptures, to meditate on the meaning of Sutras, to remain alone and to be patient – all these constitute the path of Moksha.

गुरु और वृद्धों की सेवा करना, अज्ञानी लोगों का दूर से वर्जन करना, स्वाध्याय करना, एकान्त में रहना, सूत्रार्थ का चिंतन करना तथा धैर्य रखना यह मोक्ष-प्राप्ति का मार्ग है ।

ગુરુ અને વૃદ્ધોની સેવા કરવી, અજ્ઞાની જીવોના સંગથી દૂર રહેવું, સ્વાધ્યાય કરવો, સૂત્રાર્થનું સારી રીતે ચિંતન કરવું, એકાંતમાં રહેવું અને ધૈર્ય ધારણ કરવું એ મોક્ષપ્રાપ્તિનો માર્ગ છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाणिवह-मुसावाया-अदत्त-मेहूण-परिग्गहा विरओ ।
राईभोयणविरओ जीवो भवइ अणासवो ॥

One who has abstained from injury to living beings, untruth, theft, sexual indulgence, possession of wealth and also from taking meals at night does not commit new sins.

प्राणीवध, मृषावाद, अदत्त-ग्रहण, अब्रह्मचर्य, परिग्रह और रात्रि-भोजन से विरत जीव अनाश्रव (आश्रवरहित-नए पापकर्म से रहित) होता है ।

પ્રાણીવધ, મૃષાવાદ (અસત્ય), ચોરી, અબ્રહ્મચર્ય અને પરિગ્રહથી અટકી ગયેલો તથા રાત્રિભોજનથી વિરમી ગયેલો જીવ અનાશ્રવ (આશ્રવરહિત-નવાં પાપને રોકનાર) બને છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहच्च चंडालियं कट्टु न निण्हवेज्ज कयाइ वि ।
कडं कडे त्ति भासेज्जा अकडं नोकडे त्ति य ॥

If you have committed any sinful blunder, do not hide it. Admit that it has been committed by you. If you have not committed any sinful blunder, then clarify that too.

अनजाने में कोई चंडाल कर्म (दुष्ट कर्म) हो गया हो तो उसे कभी भी न छिपाएं । दुष्ट कार्य किया हो तो किया है वैसा कहें और न किया हो तो नहीं किया वैसा कहें ।

જો ભૂલથી ચંડાલ કર્મ (દુષ્ટ કર્મ) થઈ જાય તો તેને છુપાવવું નહિ. જો દોષ થઈ ગયો તો તેનો સ્વીકાર કરી લેવો. જો પોતાની ભૂલ ન થઈ હોય તો તેનો તે પ્રમાણે ખુલાસો કરી લેવો.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।
निव्वाणं परमं जाइ घयसित्ते व पावए ॥

One who is straightforward attains purity. One who is pure becomes steadfast in religion. Such a person attains the highest emancipation (Nirvana), like the lustre of fire sprinkled with ghee.

सरल मनुष्य को शुद्धि प्राप्त होती है । शुद्ध मनुष्य में धर्म स्थिर होता है । जिस में धर्म स्थिर होता है वह घृत से अभिषिक्त अग्नि की तरह परम निर्वाण को प्राप्त होता है ।

સરળ મનુષ્યની શુદ્ધિ થાય છે. શુદ્ધ માણસમાં જ ધર્મ સ્થિર થાય છે. ઘીથી સિંચાયેલા અગ્નિની જેમ શુદ્ધ થઈ તે મનુષ્ય પરમ મુક્તિ પામે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं खु नाणिणो सारं
जं न हिंसइ किंचण ।
अहिंसासमयं चेव
एतावंत वियाणिया ॥

It is the essential characteristic of a wise man that he does not kill any living being. One should know that non-killing and equality of all living beings are the main principles of religion.

ज्ञानी के लिए सारतत्त्व यही है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे । अहिंसा और समता (सभी जीवों के प्रति समानता) इन्ही को मुख्य धर्म समझो ।

જ્ઞાની માણસોનું આ સારભૂત લક્ષણ છે કે તેઓ કોઈ પણ પ્રાણીની હિંસા ન કરે. એટલું જાણવું જોઈએ કે અહિંસા અને સમતા (સર્વ જીવો પ્રત્યે સમાનપણું) એ મુખ્ય ધર્મ છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणुसत्तम्मि आयाओ जो धम्मं सोच्च सद्दहे ।
तपस्वी वीरियं लद्धुं संवुडो निद्धुणे रयं ॥

After attaining human birth, he who listens to and believes in true religion and practises it with penance and self-control, guards himself and gets rid of the dust of accumulated Karmas.

मनुष्य-जन्म को प्राप्त कर जो धर्म को सुनता है, उस में श्रद्धा करता है और उस के अनुसार पुरुषार्थ करता है, वह तपस्वी नये कर्मों को रोकता हुआ कर्मरूपी रज़ को झाड़ता है ।

મનુષ્યજન્મ પામેલો જે જીવ ધર્મને સાંભળીને શ્રદ્ધાળુ બને છે તે જીવ પછી તપસ્વી બનીને તથા સંયમી થઈને કર્મમળને ખંખેરી નાખવાનો પુરુષાર્થ કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे पावकम्मेहिं धणं मणुस्सा
समाययंती अमइं गहाय ।
पहाय ते पास पयट्ठिए नरे
वेराणबद्धा नरगं उवेंति ॥

Those people who accumulate wealth through sinful deeds, as if they were collecting nectar, get involved in great sins, create enmity with others, and eventually leaving all wealth here, go to hell.

जो मनुष्य धन को अमृत समझ कर, पापकर्मों से उपार्जन करते हैं, उन्हें देखो । वे कर्म के फंदे में पड़ने के लिए तैयार है । वे वैर से बंधे हुए सारा धन यहीं छोड़कर नरक में जाते हैं ।

જે મનુષ્ય પાપકર્મો કરીને, ધનને અમૃત સમજીને ભેગું કરે છે, તેઓ કર્મના ફાંસામાં બંધાય છે અને છેવટે વેર બાંધીને, ધનને અહીં જ છોડીને, નરકગતિમાં ચાલ્યા જાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्झत्थं सव्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए ।
ना हणे पाणिणो पाणे भयवेराओ उवरए ॥

Seeing the self in everyone and everywhere, knowing that all beings love their life, we, having made ourselves free from fear and enmity, should not kill other beings.

सर्व स्थल में सर्व में खुद को देखकर, सर्व जीवों को अपना प्राण प्रिय है यह समझकर, भय और वैर से उपरत पुरुष प्राणियों के प्राणों का घात न करे ।

સર્વ સ્થળે, સર્વને પોતાની જેમ જોઈને, સર્વ પ્રાણીઓને પોતાના પ્રાણ વહાલા છે એમ સમજીને, ભય તથા વેરથી વિરમીને, કોઈ પણ પ્રાણીની હિંસા કરવી નહિ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न हु पाणवहं अणुजाणे
मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं ।
एवायरिएहिं अक्खायं
जेहिं इमो साहुधम्मो पण्णत्तो ॥

Those who support others' act of killing living beings can never be free from all the miseries. All those who have preached true religion have said so.

प्राणीवध का अनुमोदन करने वाला सर्व दु:खों से कभी भी मुक्त नहीं हो सकता । जिन्हों ने यह साधु-धर्म समझाया है उन्होंने ऐसा कहा है ।

જેઓ પ્રાણીવધનું અનુમોદન કરે છે, તેઓ ક્યારેય સર્વ દુ:ખોથી છૂટી શકતા નથી. જેઓએ સાધુધર્મ સમજાવ્યો છે તેઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचिंदियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोभं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं सव्वमप्पे जिए जियं ॥

It is difficult to conquer the five senses as well as anger, pride, delusion and greed. It is even more difficult to conquer the self. Those who have conquered the self have conquered everything.

पाँच इन्द्रियाँ और क्रोध, मान, माया और लोभ दुर्जेय हैं। इस से भी अधिक दुर्जेय आत्मा है । आत्मा को जीत लेने पर ये सब जीत लिए जाते हैं ।

પાંચ ઇન્દ્રિયો તથા ક્રોધ, માન, માયા અને લોભને જીતવાં કઠિન છે. આત્માને જીતવો તેથી પણ વધુ કઠિન છે; પરંતુ આત્માને જીતવાથી સર્વ જીતી લેવાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य ।
अहो ! दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसंति जंतवो ।।

Birth is painful. Old age is painful. Disease and death are also painful. Oh ! the whole world is full of unhappiness, where all living beings suffer afflictions.

जन्म दु:ख है; बुढ़ापा दु:ख है; रोग और मृत्यु भी दु:ख है । अहो ! सारा संसार दु:खमय है, जहां जीव दु:ख से पीडित हो रहे हैं ।

જન્મ દુ:ખ છે; ઘડપણ દુ:ખ છે; રોગો અને મરણ પણ દુ:ખ જ છે. અહો ! આખો સંસાર દુ:ખમય છે, જેમાં જીવો દુ:ખથી પીડાઈ રહ્યા છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा कुम्मे सअंगाइं सए देहे समाहरे ।
एवं पावाइं मेहावी अज्झप्पेण समाहरे ॥

Just as a tortoise withdraws all its limbs within its own body, in the same way a wise man protects himself from sins through spirituality.

जिस प्रकार कछुआ अपने अंगों को अपने शरीर में समेट लेता है, उसी प्रकार मेधावी पुरुष आध्यात्मिक भावना द्वारा पापों को समेट लेता है ।

જેવી રીતે કાચબો પોતાનાં અંગોને પોતાના શરીરમાં સંકોચી લે છે, તેવી રીતે જ્ઞાની પુરુષો અધ્યાત્મ દ્વારા પોતાનાં પાપોને સંકોચી લે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वित्तं पसवो य नाइओ
तं बाले सरणं ति मन्नइ ।
एते मम तेसु वि अहं
नो ताणं सरणं न विज्जइ ॥

An ignorant person believes that wealth, animals and relatives are his protectors. He says, `They belong to me and I belong to them.' But they are neither his protectors nor shelter.

अज्ञानी मनुष्य मानता है कि धनसंपत्ति, पशु, ज्ञातिबंधु ये सब उसे रक्षण देने वाले हैं, क्योंकि ' ये सब मेरे हैं, और मैं उनका हूँ ' । किन्तु ये सब रक्षक नहीं है और शरणरूप भी नहीं हैं ।

અજ્ઞાની માણસ એમ માને છે કે ધનસંપત્તિ, પશુઓ અને જ્ઞાતિબંધુઓ એ બધાં પોતાને રક્ષણ આપવાવાળાં છે, કારણ કે 'તેઓ મારાં છે અને હું તેઓનો છું.' પરંતુ એ બધાં તેનાં રક્ષક નથી કે શરણરૂપ નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयं सयं पसंसंता गरहंता परं वयं ।
जे उ तत्थ विउस्संति संसारं ते विउस्सिया ॥

Those who praise their own views and condemn the words of others, only to show off thier so-called learnedness, are indeed wandering in the worldly cycle of birth and death.

जो अपने मत की प्रशंसा करते हैं और दूसरों के वचनों की निन्दा करते हैं, और इस तरह अपने पांडित्य का दिखावा करते हैं वे संसार में भ्रमण करते रहते हैं।

જેઓ પોતાના મતની પ્રશંસા કરે છે અને બીજાનાં વચનોની નિંદા કરે છે અને એ રીતે પોતાના પાંડિત્યનું પ્રદર્શન કરે છે તેઓ સંસારમાં જ ભ્રમણ કરતા રહે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयं तिवायए पाणे
अदुव ऽ न्नेहिं घायए ।
हणंतं वा ऽ णुजाणाइ
वेरं वड्ढइ अप्पणो ॥

A Person who kills any living being either himself or gets it killed by someone else or supports someone who is killing, eventually increases his own enmity.

जो मनुष्य स्वयं प्राणियों का घात करता है या औरों से घात करवाता है या घात करने वाले की प्रशंसा करता है वह अपना वैर बढ़ाता है ।

જે માણસ પોતે પ્રાણીઓનો ઘાત કરે છે અથવા બીજા પાસે ઘાત કરાવે છે અથવા કરનાર વ્યક્તિનું તે માટે અનુમોદન કરે છે, તે પોતાનું વેર વધારે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहरे हत्थपाए य मणं सव्विंदियाणि य ।
पावगंच परिणामं भासादोसं च तारिसं ॥

Ascetics should have control over their hands and feet, mind and all the five senses. They should avoid faulty language and such activities which may result in sin.

साधु अपने हाथ, पाँव, मन और सर्व इन्द्रियों को नियन्त्रण में रखे । वह पापपूर्ण परिणाम को प्राप्त होनेवाले कार्य और भाषा के दोषों को भी छोड़े ।

સાધુઓએ પોતાનાં હાથ, પગ, મન, અને પાંચ ઇન્દ્રિયોને સંયમમાં રાખવાં જોઈએ. પાપમય પરિણામવાળી પ્રવૃત્તિઓનો અને ભાષાદોષનો પણ તેઓએ ત્યાગ કરવો જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संबुज्झमाणे उ णरे मइमं
पावाउ अप्पाण निवट्टएज्जा ।
हिंसप्पसूयाइं दुहाइं मत्ता
वेराणुबंधिणी महब्भयाणि ॥

Violence gives birth to miseries. It creates enmity and is very dangerous. Knowing this, a wise man should refrain from sinful activities.

हिंसा से दु:ख उत्पन्न होते हैं । उस से वैर का बंधन होता है जो महाभंयकर होता है । यह जानकर बुद्धिमान मनुष्य पापकर्म से दूर रहे ।

હિંસાથી દુ:ખ જન્મે છે. તે વેરને બાંધનારાં અને મહાભંયકર હોય છે. આવું સમજીને બુદ્ધિમાન મનુષ્યે પોતાની જાતને પાપકર્મમાંથી નિવૃત્ત કરવી જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वाहि अणुजुत्तीहि मतिमं पडिलेहिया ।
सव्वे अक्कंतदुक्खा य अतो सव्वे न हिंसया ॥

A wise man, considering all points of views and knowing that nobody likes unhappiness, consequently should stop killing any living being.

सर्व प्रकार की युक्तियों से ज्ञान प्राप्त कर और ' सर्व प्राणियों को दु:ख अप्रिय है ' यह जानकर बुद्धिमान मनुष्य किसी भी प्राणी की हिंसा न करे ।

પ્રજ્ઞાશીલ મનુષ્યે સર્વ પ્રકારની યુક્તિઓથી વિચાર કરીને તથા સર્વ પ્રાણીઓને દુ:ખ ગમતું નથી એ જાણીને કોઈ પણ પ્રાણીની હિંસા ન કરવી જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पभू दोसे निराकिच्चा
ण विरुज्झेज्ज केण वि ।
मणसा वयसा चेव
कायसा चेव अंतसो ॥

Those who have conquered their senses and are free from defects, will never take their revenge on anyone, mentally, verbally or physically till the end of life.

इन्द्रियों को जीतनेवाला मनुष्य सर्व दोषों का त्याग कर, किसी भी प्राणी के साथ, जीवन–पर्यन्त, मन, वचन, और काया से वैर-विरोध न करे ।

ઇન્દ્રિયોને જીતનાર મનુષ્ય સર્વ દોષોનો ત્યાગ કરી કોઈ પણ પ્રાણીની સાથે જીવનપર્યન્ત મનથી, વચનથી કે કાયાથી વેર બાંધે નહિ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण कम्मुणा कम्म खवेंति बाला
अकम्मुणा कम्म खवेन्ति धीरा ।
मेधाविणो लोभभयावतीता
संतोसिणो णो पकरेन्ति पावं ॥

Ignorant beings cannot destroy their Karmas by actions. The wise men destroy their Karmas even without doing anything. The wise are above greed and fear. They are contented and therfore do not commit any sin.

अज्ञानी जीव कर्मों का क्षय नहीं कर सकते । धीर पुरुष अकर्म से कर्मों का क्षय करते हैं । प्रज्ञावान मनुष्य लोभ और भय से दूर रहते हैं । वे संतोषी होते हैं इस लिए पाप कर्म नहीं करते ।

અજ્ઞાની જીવો કર્મોનો ક્ષય કરી શકતા નથી. ધીર પુરુષો અકર્મથી કર્મનો ક્ષય કરે છે. બુદ્ધિમાન પુરુષો લોભ અને ભયથી દૂર રહે છે. તેઓ સંતોષી હોય છે અને તેથી પાપકર્મ કરતા નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भासमाणो ण भासेज्जा णो य बंफेज्ज मम्मयं ।
माइट्ठाणं विवज्जेज्जा अणुवीइ वीयागरे ॥

A monk should not interrupt others while they are talking. He should not take delight in betraying confidence of others. He should avoid deceitful speech. His speech should be pre-meditated.

कोई आपस में बातचीत कर रहे हों उनके बीच में मुनि बोले नहीं, किसी की गुप्त बात प्रकाशित न करे, कपटयुक्त वचनों का त्याग करे और जो बोले वह सोचकर बोले ।

મુનિએ બીજાઓ વાત કરતા હોય ત્યારે વચ્ચે ન બોલવું. તેણે બીજાની ગુપ્ત વાત પ્રકાશિત ન કરવી. તેણે કપટયુક્ત વાણી ન બોલવી. તે જે કંઈ બોલે તે વિચારીને જ બોલે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो जीवे वि न याणति अजीवे वि न याणति ।
जीवा ऽ जीवे अयाणंतो कह सो नाहिइ संजमं ॥

One who does not know what life is also does not know what non-life is. Thus he being ignorant of what life is and what non-life is, how can he know what self-control is ?

जो जीवों को नहीं जानता और अजीवों को भी नहीं जानता, इस तरह जीव और अजीव को न जाननेवाला वह संयम को कैसे जानेगा ?

જે જીવોના સ્વરૂપને નથી જાણતા તથા અજીવોના સ્વરૂપને પણ નથી જાણતા, એમ જે જીવ અને અજીવ બંનેને નથી જાણતા તે સંયમના સ્વરૂપને કેવી રીતે જાણી શકે ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो जीवे वि वियाणति अजीवे वि वियाणति ।
जीवा ऽ जीवे वियाणंतो सो हु नाहिइ संजमं ॥

One who knows what life is, also knows what non-life is. Thus, one who knows what life is and what non-life is, also knows what self-control is.

जो जीवों को भी जानता है और अजीवों को भी जानता है, इस तरह जीव और अजीव को जाननेवाला वह संयम को जानता है ।

જે જીવોના સ્વરૂપને જાણે છે તથા અજીવોના સ્વરૂપને જાણે છે, એમ જે જીવ અને અજીવ બંનેને જાણે છે, તે સંયમના સ્વરૂપને જાણે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नियडीसढे
वुब्भई से अविणीयप्पा कट्ठं सोयगयं जहा ॥

Those who are hot-tempered, ignorant, egoistic, uttering bitter words, deceitful and roguish, are indisciplined. They are carried away in the strong current of Samsara like a piece of wood.

जो क्रोधी, अज्ञानी, अहंकारी, अप्रियवादी, मायावी और शठ हैं वे अविनीतात्मा नदी के प्रवाह में पड़े हुए काठ की तरह संसारस्रोतमें खिंचे जाते हैं ।

જેઓ ક્રોધી, અજ્ઞાની, અહંકારી, અપ્રિય વચન બોલનારા, માયાવી અને શઠ હોય છે તે અવિનીતાત્મા પાણીના પ્રવાહમાં જેમ લાકડું તણાય તેમ સંસારમાં તણાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमं नाणं तओ दया एवं चिट्ठइ सव्वसंजए ।
अन्नाणी किं काही किं वा नाहिइ छेय पावगं ॥

First there must be knowledge and then compassion. This is how all monks achieve self-control. What can an ignorant person do ? How can he know what is good for him and what sin is ?

पहले ज्ञान और फिर दया; इस प्रकार सब मुनि संयम में स्थित होते हैं । अज्ञानी क्या करेगा ? और वह क्या जानेगा कि अपने लिए क्या श्रेय है और क्या पाप है ?

પહેલાં જ્ઞાન અને પછી દયા. આ રીતે સર્વ સાધુઓ સંયમમાં સ્થિર થઈ શકે છે. અજ્ઞાની શું કરી શકશે ? પોતાને માટે શું શ્રેય છે અને શું પાપ છે તે એ કેવી રીતે જાણી શકશે ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वे पाणा पियाउया सुहसाया
दुक्खपडिकूला अप्पियवहा पियजीवणो
जीविउकामा सव्वेसिं जीवियं पियं ।

All living beings love their life. For them happiness is desirable; unhappiness is not desirable. Nobody likes to be killed. Everybody is desirous of life. Everyone loves his own life.

सब प्राणियों को आयुष्य प्रिय है, सुख अनुकूल है, दु:ख प्रतिकूल है, वध अप्रिय है, जीवित रहना प्रिय है । सब जीवन के इच्छुक हैं और सबको अपना जीवन प्रिय होता है ।

સર્વ પ્રાણીઓને પોતાનું આયુષ્ય પ્રિય છે, સુખ અનુકૂળ છે, દુ:ખ પ્રતિકૂળ છે, વધ અપ્રિય છે, જીવવું પ્રિય છે. સર્વ જીવો જીવવાની ઇચ્છાવાળા છે. સર્વને પોતાનું જીવન પ્રિય લાગે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कं पि बंभचेरे जंमिय आराहियं पि आराहियं
वयमिणं सव्वं तम्हा निउएण बंभचेरं चरियव्वं ॥

Those who have properly practised the single vow of celibacy are said to have practised all the vows. Therefore, a wise person should practise the vow of celibacy perfectly.

जिन्होंने सिर्फ एक ब्रह्मचर्य व्रत की ठीक आराधना कर ली है उन्होंने सब व्रतों की आराधना कर ली है ऐसा समझना चाहिए । इस लिये निपुण साधक ब्रह्मचर्य व्रत की ठीक से आराधना करे ।

જેમણે એક બ્રહ્મચર્ય વ્રતની બરાબર આરાધના કરી છે, તેમણે બધાં વ્રતોની સારી આરાધના કરી છે એમ જાણવું. એટલા માટે નિપુણ સાધકે બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું સારી રીતે પાલન કરવું જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूयणट्ठा जसोकामी माण-सम्माण कामए ।
बहुं पसवई पावं मायासल्लं च कुव्वई ॥

A monk who is active to get himself worshipped by others, keen on fame and expects respectful treatment everywhere is in fact indulging in deceitful Karma and commits many sins.

स्वपूजा का इच्छुक, यश का कामी और मान-सम्मान की कामना करनेवाला मुनि बहुत सारे पाप उत्पन्न करता है और माया-शल्य का सेवन करता है ।

જે મુનિ પોતાની પૂજા થાય એ માટે પ્રયત્નશીલ હોય છે, યશની કામનાવાળા હોય છે તથા માન-સન્માનની ઇચ્છાવાળા હોય છે તે બહુ પાપકર્મ ઉપાર્જે છે અને માયાશલ્ય કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं ।
ना ऽ यरंति मुणी लोए भेयाययण वज्जिणो ॥

A breach of the vow of celibacy is a horrible sin. It is the root of carelessness and the cause of worst result. Therefore a monk should not commit such an offence in the world. He should keep himself away from such places as may challenge his self-control.

अब्रह्मचर्य इस लोक में घोर पाप है, प्रमाद का घर है और दुर्गति का कारण है । इस लिए मुनि अब्रह्मचर्य का सेवन नहीं करते और संयम का भंग करे ऐसे स्थानों से दूर रहते हैं ।

અબ્રહ્મચર્ય ઘોર પાપ છે. પ્રમાદનું તે ઘર છે અને દુર્ગતિનું કારણ છે. જગતમાં એટલા માટે મુનિ એનું સેવન કરતા નથી તથા સંયમનો ભંગ કરે એવાં સ્થાનોથી દૂર રહે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा कुक्कुडपोयस्स निच्चं कुल्लओ भयं ।
एवं खु बंभयारिस्स इत्थीविग्गहो भयं ॥

Just as a young chicken has constant fear of cats, similarly, a person practising the vow of celibacy has constant fear of the body of a woman.

जिस प्रकार मुर्गे के बच्चे को सदा बिल्ली से भय होता है, उसी प्रकार ब्रह्मचारी को स्त्री के शरीर से भय होता है ।

જેવી રીતે કુકડાના બચ્ચાને હમેશાં બિલાડીનો ભય રહે છે, તેવી રીતે બ્રહ્મચારીને હમેશાં સ્ત્રીના શરીરથી ભય રહે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पत्तियं जेण सिया आसु कुप्पेज वा परो ।
सव्वसो तं न भासेज्जा भासं अहियगामिणिं ॥

One should never utter such harmful words as may create displeasure or distrust in others, or by hearing which others may immediately lose their temper.

जिस भाषा से अप्रीति और अविश्वास उत्पन्न हो या और कोई शीघ्र कुपित हो ऐसी अहितकर भाषा सर्वथा नहीं बोलनी चाहिए ।

જે ભાષા બોલવાથી બીજાને અપ્રીતિ કે અવિશ્વાસ ઉત્પન્ન થાય અથવા બીજાને તરત ગુસ્સો થાય એવી અહિતકર ભાષા ક્યારેય ન બોલવી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विभूसा इत्थिसंसग्गी पणीयरसभोयणं ।
नरस्स ऽ त्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥

Personal adornment, contact with women, and very rich food are like deadly poison named Talput for a person who is seeking self-realisation.

आत्मगवेषी पुरुष के लिए विभूषा, स्त्री का संसर्ग और स्वादिष्ट भोजन, तालपुट विष के समान हैं ।

આત્મગવેષી પુરુષ માટે વિભૂષા, સ્ત્રીનો સંસર્ગ તથા સ્વાદિષ્ટ ભોજન, તાલપુટ ઝેર સમાન છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तभित्तिं न निज्झाये नारिं वा सुअलंकियं ।
भक्खरं पिव दट्ठणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥

A monk should never stare at a well-dressed woman or even at a painting of a woman on a wall. He should immediately withdraw his glance just as a glance at the midday sun is immediately withdrawn.

मुनि आभूषणों से सुसज्जित नारी को या दीवार पर चित्रित नारी को टकटकी लगाकर न देखे । उन पर दृष्टि पड़ भी जाये तो उसे ऐसे खींच ले जैसे मध्याह्न के सूर्य पर पड़ी हुई दृष्टि स्वयं खिंच जाती है ।

સાધુએ અલંકારોથી સુસજ્જ નારીને કે ભીંત ઉપર ચીતરેલી નારીને ટીકીટીકીને ન જોવી જોઈએ. એના ઉપર કદાચ દૃષ્ટિ પડી જાય તો તે પાછી ખેંચી લેવી, જેમ મધ્યાહ્નના સૂર્ય સામે પડેલી દૃષ્ટિ આપોઆપ પાછી ખેંચાઈ જાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयावयाही चय सोगुमल्लं
कामे कमाही कमियं खु दुक्खं ।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं
एवं सुही होहिसि संपराए ॥

Give up tenderness and strengthen yourself with penance. If you control desires, miseries will run away. Get rid of faults and cut off attachment. Thus you will be happy in this worldly life.

तू तप कर और सुकुमारता का त्याग कर । तू कामवासना का अतिक्रम कर । इस से दु:ख स्वयं चला जायेगा । दोष को छिन्न कर और राग भाव को दूर कर । ऐसा करने से ही तू संसार में सुखी होगा ।

તું તપનું સેવન કર અને સુકુમારતાનો ત્યાગ કર. તું કામવાસનાથી પર થઈ જા તો દુ:ખ પોતે જ નાસી જશે. તું દોષનો છેદ કર અને રાગભાવને દૂર કર. એમ કરવાથી તું સંસારમાં સુખી થઈશ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरं वा मेरगं वा वि अन्नं वा मज्जगं रसं ।
ससक्खं न पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥

A monk who is keen to look after his own social prestige should never drink wine, liquor or any such intoxicating substance with his self as a witness.

अपने यश का संरक्षण करनेवाला मुनि सुरा, मेरग (महुए की शराब) या अन्य किसी प्रकार के मादक रस का, आत्म-साक्षी से पान न करे ।

પોતાના યશનું સંરક્ષણ કરવાની ઇચ્છાવાળા ભિક્ષુએ દ્રાક્ષના દારૂનું, મહુડાના દારૂનું કે બીજા કોઈ માદક રસનું સેવન આત્મસાક્ષીએ ન કરવું જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हत्थपायपडिच्छिन्नं कण्णनासविगप्पियं ।
अवि वाससइ नारिं बंभयारी वियज्जए ॥

A person practising celibacy should avoid privacy with even a woman whose hands, feet, ears and nose are cut off and who may be a hundred years of age.

जिस के हाथ-पैर कटे हुए हों, नाक और कान छिन्न हों वैसी सो वर्ष की बूढ़ी नारी के साथ भी ब्रह्मचारी एकान्त में न रहे ।

બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું પાલન કરનારે, હાથ-પગ કપાયેલી તથા કાન અને નાક છેદાયેલી એવી સો વર્ષની વૃદ્ધ નારી હોય તો પણ તેની સાથે એકાંતમાં ન રહેવું જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खवेत्ता पूव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ।
सिद्धिमग्गमणुप्पता ताइणो परिनिव्वुड ॥

Having destroyed all previous Karmas through self-control and penance, monks reach the path of liberation and attain Nirvana.

संयम और तप द्वारा पूर्व-संचित कर्मों का क्षय कर के मुनि, सिद्धि-मार्ग को प्राप्त कर परिनिर्वृत (मुक्त) होते हैं ।

સંયમ અને તપ દ્વારા પૂર્વસંચિત કર્મોનો ક્ષય કરીને સંયમી પુરુષો સિદ્ધિમાર્ગને પ્રાપ્ત કરીને પરિનિર્વૃત (મુક્ત) થાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छिसि नारिओ ।
वायाइद्धो व्व हडो अट्ठियप्पा भविस्ससि ॥

If you think of enjoying sexual pleasure with every woman you see, you will become unsteady like the Hada plant, shaken by the breeze.

जो तू स्त्रियों को देखकर उनके प्रति कामवासना का भाव करता रहेगा तो तू वायुसे आहत हड़ वनस्पति की तरह अस्थिरात्मा हो जायेगा ।

જો તું સ્ત્રીઓને જોઈને તેમના પ્રત્યે કામવાસનાનો ભાવ કર્યા કરીશ તો તારો આત્મા પવનથી હાલ્યા કરતી હડ નામની વનસ્પતિની જેમ અસ્થિર બની જશે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेणे जहा संधिमुहे गहीए
सकम्मुणा कच्चइ पावकारी ।
एवं पया ! पेच्च इहं च लोए
कडाण कम्माण न मोक्खु अत्थि ॥

When a thief is caught while breaking into a house, he is punished for the sin committed. Similarly, all living beings have to bear the fruits of their Karmas, either in this life or in the next life. No one can escape from the results of the Karmas done.

जैसे सेंध लगाते हुए पकड़ा गया चोर अपने कर्म के फल भोगता है उसी प्रकार जीव को अपने कर्मों का फल इस लोक और परलोक में भोगना पडता है । किए हुए कर्मों का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं होता ।

ખાતર પાડવાનું પાપકર્મ કરનાર ચોર જેમ પકડાઈ જાય છે અને પોતાનાં કર્મનાં ફળ ભોગવે છે, તેમ પાપ કરનાર જીવ આ લોકમાં કે પરલોકમાં તેનું ફળ ભોગવે છે. કરેલાં કર્મનાં ફળ ભોગવ્યા વિના છુટકારો નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कसिणं पि जो इमं लोयं
पडिपुन्नं दलेज्ज एक्कस्स ।
तेणावि से ण संतुस्से
इइ दुप्पूरए इमे आया ॥

Even if the whole rich world is given to one man, he will not be satisfied with that. It is extremely difficult to get all the desires of a man fulfilled.

यदि कोइ किसी को समृद्धि से परिपूर्ण यह पूरा लोक भी दे दे, तो भी वह उस से संतुष्ट नहीं होगा । जीव की तृष्णा इतनी दुष्पूर होती है ।

જો કોઈ એક માણસને સમૃદ્ધિથી પૂર્ણ એવો આખો લોક આપી દેવામાં આવે તો પણ તેને એનાથી સંતોષ થશે નહિ. જીવની તૃષ્ણા આવી રીતે સંતોષાવી ઘણી કઠિન છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहे वयइ कोहेणं माणेणं अहमा गइ ।
माया गइपडिग्घाओ लोहाओ दुहओ भयं ॥

By anger one gets the lowest type of life (i.e. Narak-gati). By ego one gets the low type of life. Deceit becomes a hindrance to a better state of life. Greed endangers this as well as the next life.

क्रोध से मनुष्य अधोगति (नरकगति) में जाता है । मान से अधम गति प्राप्त होती है । माया से शुभ गति का विनाश होता है । लोभ से इस लोक में और परलोक में भय होता है ।

ક્રોધથી નીચેની ગતિ (નરકગતિ) મળે છે. માનથી અધમ ગતિ પ્રાપ્ત થાય છે. માયા શુભ ગતિનો નાશ કરે છે. લોભથી આ લોકમાં અને પરલોકમાં ભય ઊભો થાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुमपत्तए पंडुयए जहा निवडइ राइगणाण अच्चए ।
एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम मा पमायए ॥

A withered leaf of a tree falls down after some nights go by. Similarly the life of a man comes to an end. Therefore, O Gautama ! do not be careless even for a moment.

रात्रियाँ बीतने पर जैसे वृक्ष का पका हुआ पीला पत्ता गिर जाता है, उसी तरह मनुष्य का जीवन भी समाप्त हो जाता है । इस लिए हे गौतन ! समय भर के लिए भी प्रमाद मत कर ।

જેમ વૃક્ષનું પીળું થઈ ગયેલું પાંદડું રાત્રિઓ વીતતાં ખરી પડે છે, તેમ મનુષ્યના જીવનનો પણ અંત આવે છે. માટે હે ગૌતમ ! સમય માત્રનો પ્રમાદ ન કર.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कणकुंडगं जहित्ताणं विट्ठं भुंजइ सूयरे ।
एवं सीलं जहित्ताणं दुस्सीलं रमई मिए ॥

A pig prefers to eat dirty things, leaving good food-grains aside. Similarly an ignorant person indulges in evil matters, leaving virtuous matters aside.

जैसे सूअर चावल की भूसी को छोड़कर विष्टा खाता है, वैसे ही अज्ञानी मनुष्य शील को छोड़ कर दुःशीलता में रमता है ।

ભુંડ અનાજના ડૂંડાને છોડીને વિષ્ટા ખાવાનું પસંદ કરે છે. એવી રીતે અજ્ઞાની માણસ સદાચાર છોડીને દુરાચારમાં આનંદ માણે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दे रुवे य गंधे य रसे फासे तहेव य ।
पंचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥

A monk should always abstain from the pleasure of the objects of the five senses i.e. sound, form, smell, taste and touch.

शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श इन पाँच प्रकार की इन्द्रियों के कामभोग के विषयों का मुनि सदा त्याग करे ।

શબ્દ, રૂપ, ગંધ, રસ, અને સ્પર્શ એ પાંચ પ્રકારની ઇન્દ્રિયોના કામભોગના વિષયોનો મુનિએ સદા ત્યાગ કરવો જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न तं अरी कंठछेत्ता करेइ
जं से करे अप्पणिया दुरप्पा ।
से णाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते
पच्छाणुतावेण दयाविहूणे ॥

The harm that an evil person does to himself is much more than the harm that his enemy may do to him by cutting off his throat. Such a person, devoid of compassion, realises, his folly on his deathbed and repents for his evil deeds.

दुर्जन अपनी दुष्प्रवृत्ति से अपना जो अनिष्ट करता है वैसा अनिष्ट तो गला काटने वाला शत्रु भी नहीं करता । ऐसा दयाविहीन मनुष्य मृत्यु के मुख में पहुंचने के समय दुराचार को समझता है ओर पश्चात्ताप करता है ।

દુરાચાર કરનાર જીવ પોતે પોતાનું જેટલું અનિષ્ટ કરે છે, એટલું અનિષ્ટ તો એનું ગળું કાપનારો દુશ્મન પણ નથી કરતો. આવા દયાવિહીન જીવને જ્યારે મૃત્યુના મુખમાં જવાનું થાય છે, તે વખતે તે પોતાના દુરાચારને સમજે છે અને પછી પશ્ચાત્તાપ કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा सुणी पूइकण्णी णिक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एवं दुस्सीलपडणीए मुहरी निक्कसिज्जई ।।

A bitch with rotten ears is driven away from everywhere. Similarly a person of bad conduct, of an insubordinate attitude and of talkative nature is turned out from everywhere.

जैसे सड़े हुए कानोंवाली कुतिया सभी स्थानों से निकाली जाती है, वैसे ही दुःशील, प्रतिकूल वर्तन करनेवाला और वाचाल मनुष्य सभी स्थानों से निकाल दिया जाता है ।

જેમ સડેલા કાનવાળી કૂતરીને સર્વ સ્થળેથી હાંકી કાઢવામાં આવે છે, તેમ દુરાચારી, પ્રતિકૂળ વર્તન કરનાર અને વાચાળ મનુષ્યને સર્વ સ્થળેથી કાઢી મૂકવામાં આવે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिसो ! रम पावकम्मुणा
पलियंतं मणुयाण जीवियं ।
सन्ना इह काममुच्छिया
मोहं जंति नरा असंवुडा ॥

O Man ! Refrain from sinful acts because human life goes by quickly. Those who are addicted to material pleasures or have no self-control are overpowered by delusion.

हे पुरुष ! पापकर्मों से निवृत्त हो जा ! यह मनुष्य-जीवन शीघ्रता से भागा जा रहा है । कामभोगों में मूर्छित और असयंमी मनुष्य मोहग्रस्त होता है ।

હે પુરુષ ! મનુષ્યજીવન ચાલ્યું જનારું છે, એમ સમજીને પાપકર્મો કરતો અટકી જા. જે મનુષ્યો અસંયમી છે અને કામભોગમાં મૂર્છિત બન્યા છે, તે મોહ પામે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संबुज्झह किं न बुज्झह
संबोही खलु पेच्च दुल्लहा ।
णो हूवणमंति राइओ
नो सुलभं पुणरावि जीवियं ॥

O Men ! Awake ! Don't you understand that it is very difficult to obtain Right Knowledge after death, in the next birth ? Those nights which have gone by shall not return. It is very difficult to obtain the human birth again.

हे मनुष्य ! बोध प्राप्त करो ! क्यों बोध प्राप्त नहीं करते ? मृत्यु के बाद संबोधि, निश्चय ही दुर्लभ है । बीती हुई रातें वापस नहीं आतीं और मनुष्य भव फिर सुलभ नहीं होता ।

હે મનુષ્ય ! તમે બોધ પામો. તમે એટલું કેમ સમજતા નથી ? મૃત્યુ પછી જ્ઞાન પામવું ખરેખર દુર્લભ છે. વીતી ગયેલી રાત્રિઓ પાછી આવતી નથી. મનુષ્ય ભવ પણ ફરીથી મળવો સુલભ નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डहरा बुड्ढाय पासह गब्भत्था वि चयंति माणवा ।
सेणे जह वट्टयं हरे एवं आउखयंमि तुट्टइ ॥

Human beings, whether young or old, die. Even those in the mother's womb die. Just as a hawk snatches away quail, similarly death takes away life.

युवक हो या वृद्ध, सब के लिए मृत्यु आ पहुंचती है, यहां तक लि गर्भावस्था में बालक की भी मृत्यु होती है । जैसे बाज छोटे पक्षी को हर लेता है वैसे ही आयुष्य पूर्ण होने पर मृत्यु जीवन को हर लेती है ।

યુવક હોય કે વૃદ્ધ હોય, મનુષ્યો અંતે તો મૃત્યુ પામે છે. કેટલાક તો ગર્ભાવસ્થામાં જ મૃત્યુ પામે છે. જેમ બાજ નાના પક્ષીને ઉપાડી જાય છે, તેમ આયુષ્ય પૂર્ણ થતાં મૃત્યુ જીવનને હરી લે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे य बुद्धा अतिक्कंता
जे य बुद्धा अणागया ।
संति तेसिं पइट्ठाणं
भूयाणं जगती जहा ॥

Just as the earth is the foundation of all living beings, in the same way peace is the foundation of all the Tirthankaras, including the past and the future Tirthankaras.

जिस तरह सब जीवों का आधारस्थान पृथ्वी है, उसी तरह जो तीर्थंकर हो चुके हैं और जो तीर्थंकर होनेवाले हैं उन सबका आधारस्थान शान्ति है ।

જેમ બધા જીવોનું આધારસ્થાન પૃથ્વી છે, તેમ જે તીર્થંકરો થઈ ગયા છે તથા જે તીર્થંકરો થવાના છે તે સર્વનું આધારસ્થાન શાન્તિ છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जसं कित्तीं सिलोगं च जा य वंदणपूयणा ।
सव्वलोयंसि जे कामा तं विज्जं परिजाणिया ॥

A wise man should know that fame, glory, praise, honour, homage and the material pleasures of the whole world are harmful to the self and therefore should renounce them.

यश, कीर्ति, श्लाघा, वंदन, पूजन और समस्त लोक में जो भी कामभोग हैं उन्हें, आत्मा के लिए अहितकर जानकर ज्ञानी पुरुष छोड़ दे ।

યશ, કીર્તિ, પ્રશંસા, વંદન, પૂજન તથા આ સમસ્ત લોકમાં જે કામભોગો છે તે બધાં આત્માને અહિત કરનાર છે, એમ જાણીને જ્ઞાની પુરુષે તે છોડી દેવાં જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह पंचहि ठाणेहिं जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थंभा कोहा पमाएणं रोगेणा ऽ ऽ लस्सएण य ॥

Ego, anger, negligence, disease and laziness are the five objects for not getting knowledge.

अहंकार, क्रोध, प्रमाद, रोग और आलस्य – इन पांच के कारण शिक्षा प्राप्त नहीं होती ।

અહંકાર, ક્રોધ, પ્રમાદ, રોગ અને આળસ – આ પાંચ કારણોને લીધે જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતું નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीहं जहा खुड्डुमिगा चरंता
दूरे चरंति परिसंकमाणा ।
एवं तु मेहावि समिक्ख धम्मं
दूरेण पावं परिवज्जएज्जा ॥

Just as the small animals like deer etc., always keep themselves away from a lion on account of fear, similarly, a wise man, discerning true religion, should always keep himself away from committing sinful acts.

जिस तरह जंगल में हरिण आदि छोटे प्राणी भय से शंकित होकर सिंह से दूर रहते हैं, इसी तरह मेधावी पुरुष धर्मतत्त्व की समीक्षा कर के पापकार्य से दूर रहते हैं ।

જેવી રીતે જંગલમાં વિચરનાર હરણ વગેરે નાનાં પશુઓ ભયની શંકાથી સિંહથી દૂર રહે છે, તેવી રીતે મેધાવી પુરુષે ધર્મના તત્ત્વની સમીક્ષા કરીને પાપ કરવાથી દૂર રહેવું જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेराइं कुव्वई वेरी तओ वेरेहिं रज्जती ।
पावोवगा य आरंभा दुक्खफासा य अंतसो ॥

A revengeful person goes on inflicting injury on others and then takes delight in doing injury. But all such activities are sinful and ultimately result in miseries.

वैरी मनुष्य वैर करता है और बाद में वैरवृद्धि कर के आनंदित होता है । परंतु तमाम पापमय प्रवृत्तियाँ अंत में दु:खदायक होती हैं ।

વેરી માણસ વેર બાંધીને પાછો વેરને વધાર્યા કરે છે અને તેથી રાજી થાય છે. પરંતુ તમામ પાપમય પ્રવૃત્તિઓ અંતે દુ:ખમાં પરિણમે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणसा वयसा चेव कायसा चेव अंतसो ।
आरओ परओ वावि दुहा वि असंजया ॥

A man without self-control kills living beings mentally, verbally or physically, either for himself or for others or gets them killed through others.

असंयमी मनुष्य मन, वचन और काया से, अपने लिए और अन्यों के लिए, करने और कराने रूप -- दोनों प्रकार से जीवों की हिंसा करते हैं ।

અસંયમી માણસ મન, વચન અને કાયાથી પોતાને માટે તથા પારકાને માટે પ્રાણીઓનો ઘાત કરે છે અને બીજા પાસે કરાવે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माइणो कट्टु माया य कामभोगे समारंभे ।
हंता छेत्ता पगब्भित्ता आयसायाणुगामिणो ॥

Deceitful persons perpetrating deceit are active only for their own comfort and happiness. They kill, cut, or dismember other living beings just for the sake of their pleasure.

अपने ही सुख के इच्छुक मायावी पुरुष माया कर के कामभोगों का सेवन करते हैं । वे प्राणियों का हनन, छेदन और कर्तन करनेवाले होते हैं ।

માત્ર પોતાના સુખની ઇચ્છા કરનાર માયાવી માણસો માયાકપટ કરીને, કામભોગનું સેવન કરે છે. તેઓ પ્રાણીઓની હિંસા કરે છે, તેમનાં અંગોપાંગોને છેદે છે અથવા ચીરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वे सयकम्मकप्पिया
अवियत्तेण दुहेण पाणिणो ।
हिंडंति भयाउला सढा
जाइजरामरणेहि ऽ भिद्दुता ॥

All living beings have their present life according to their Karmas. Their unhappiness is often latent. Wicked and terrified beings wander around experiencing the pains of birth, old age and death.

सर्व प्राणी अपने कर्मों के अनुसार अवस्था प्राप्त करते हैं । अकसर उनका दु:ख अप्रगट होता है । शठ और भय से व्याकुल जीव जन्म, जरा, और मृत्यु के दु:ख से पीडित होते हुए संसार में भटकते हैं ।

સર્વ પ્રાણીઓ પોતપોતાનાં કર્મ અનુસાર પોતાની અવસ્થા પ્રાપ્ત કરે છે. ઘણી વાર તેઓનું દુ:ખ અપ્રગટ હોય છે. શઠ તથા ભયથી વ્યાકુળ થયેલા જીવો સંસારમાં ભટકે છે અને જન્મ, વૃદ્ધાવસ્થા અને મૃત્યુનાં દુ:ખ ભોગવે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामेहि य संथवेहि गिद्धा कम्मसहा कालेण जंतवो ।
ताले जह बंधणच्चुए एवं आउक्खयंमि तुट्टइ ॥

Persons engrossed in wordly pleasures and attached to their relatives and friends ultimately face the consequences of thier own Karmas. They die when their life-span is over, just as a Tala fruit falls down, when detached from its stalk.

जैसे तालवृक्ष का फल बंधन तूटने पर गिर पडता है वैसे ही कामभोग में और परिवार में आसक्त जीव अपने कर्म के फल स्वरूप, आयुष्य टूटने पर मृत्यु को प्राप्त होता है ।

જેમ તાલવૃક્ષનું ફળ બંધન તૂટતાં નીચે પડી જાય છે, તેમ કર્મોનું ફળ ભોગવી રહેલા, કામભોગમાં તથા કુટુંબમાં આસક્ત એવા જીવો આયુષ્યનો અંત આવતાં મૃત્યુ પામે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भागमितंमि वा दुहे
अहवा उक्कमिते भवंतिए ।
एगस्स गती य आगती
विदुमंता सरणं न मन्नइ ॥

A person has to experience his miseries all by himself. After death he goes to the next life all alone. Wise men therefore know that there is nothing in this world which is worth taking shelter of.

दुःख आ पड़ने पर मनुष्य अकेला ही उसे भोगता है । मृत्यु आने पर जीव अकेला ही परभव में जाता है । इस लिए ज्ञानी पुरुष किसी को शरण--रूप नहीं मानते ।

દુ:ખ આવી પડે ત્યારે મનુષ્ય તે એકલો જ ભોગવે છે. મૃત્યુ આવે ત્યારે જીવ એકલો જ પરભવમાં જાય છે. એટલા માટે જ્ઞાની માણસો કોઈ પણ વસ્તુને પોતાના શરણરૂપ માનતા નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मा पच्छ असाहुया भवे
अच्चेही अणुसास अप्पगं ।
अहियं च असाहु सोयई
से थणइ परिदेवइ बहुं ॥

Keep yourself away from the influence of sensual pleasure. Discipline yourself, so that you may not have miseries in the next life, because such evil beings grieve, cry and groan a lot in the next birth.

परभव में दुर्गति न हो, इस विचार से अपनी आत्मा को विषयभोग से दूर रखो और उसे अनुशासन में रखो । दुर्गति में गया हुआ पापी जीव अत्यंत शोक करता है, आक्रंद करता है और वेदना से विलाप करता है ।

પરભવમાં પોતાની દુર્ગતિ ન થાય એમ વિચારીને પોતાના આત્માને વિષયભોગથી દૂર રાખો અને પોતાની જાતને શિસ્તમાં રાખો, કારણ કે દુર્ગતિમાં જતા પાપી જીવો બહુ શોક કરે છે, આક્રંદ કરે છે અને વેદનાની ચીસો પાડે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जमिणं जगई पुढो जगा
कम्मेहिं लुप्पंति पाणिणो ।
सयमेव कडेहिं गाहई
णो तस्स मुच्चेज्ज पुट्ठयं ॥

All living beings in this world experience individually the fruits of thier own Karmas. Their life after death is determined by their past deeds. Nobody can escape the results of the Karmas.

संसार के सभी प्राणी अपने कर्मों का फल भोगते हैं। अपने कर्म अनुसार वे विभिन्न गति में परिभ्रमण करते हैं। अपने कर्मों के फल भोगने से किसी का छुटकारा नहीं होता।

સંસારમાં રહેલાં પ્રાણીઓ પોતાનાં કરેલાં કર્મનાં ફળ ભોગવે છે. તેઓ પોતાનાં કર્મ અનુસાર જુદી જુદી ગતિમાં પરિભ્રમણ કરે છે. પોતાનાં કર્મનું ફળ ભોગવ્યા વિના કોઈનો છુટકારો થતો નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे इह सायाणुगा नरा
अज्झोववन्ना कामेहिं मुच्छिया ।
किवणेण समं पगब्भिया
न वि जाणंति समाहिमाहियं ॥

Those people who are only after pleasures and comforts in this world and are fully absorbed in sensual enjoyment, are reckless like the miserable persons. They do not know the path of spiritual bliss exhorted by the wise.

इस संसार में जो मनुष्य सुख-सुविधा के पीछे लगे हुए हैं, कामभोग में मूर्छित हैं, इन्द्रियों से पराजित दीन पुरुष की तरह धृष्टता से काम--सेवन करते हैं, वे, ज्ञानी पुरुषों के बताये समाधिमार्ग को नहीं जानते ।

જે માણસો આ જગતમાં સુખસગવડની પાછળ પડેલા છે અને કામભોગમાં મૂર્છિત થયેલા છે, જેઓ ઇન્દ્રિયોથી પરાજિત દીન પુરુષની જેમ ધૃષ્ટતાપૂર્વક કામસેવન કરે છે, તેઓ જ્ઞાની પુરુષોએ કહેલા સમાધિમાર્ગને જાણતા નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधुवं जीवियं नच्चा सिद्धिमग्गं वियाणिया ।
विणियट्टेज भोगेसु आउं परिमियमप्पणो ॥

Life is not permanent. It is limited. Knowing this and also having known the path of liberation, one should abstain from material peasures.

जीवन क्षणभंगुर है; अपनी आयु परिमित है; ऐसा जानकर सिद्धिमार्ग का ज्ञान प्राप्त कर के भोगों से निवृत्त हो जा ।

જીવન ક્ષણભંગુર છે. પોતાનું આયુષ્ય પરિમિત છે. એવું સમજીને તથા સિદ્ધિમાર્ગને જાણીને, ભોગોથી નિવૃત્ત થઈ જા !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सक्का सहेउं आसाए कंटया
अओमया उच्छहया नरेणं ।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए
वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥

An enthusiastic person will be prepared to bear even the torture of iron nails to get wealth or some other reward, but a person who bears the tortue of nail-like words without any expectation is indeed respectable.

उत्साही मनुष्य घन आदि की आशा में लोहमय कांटों को सहन कर सकता है; परन्तु जो किसी प्रकार की आशा रखे बिना कानों में प्रवेशते हुए वचन रूपी कांटों को सहन करता है वह पूज्य है ।

ઉત્સાહી માણસ ધન કે બીજા કશા સ્વાર્થની આશામાં લોઢાના કાંટા (ખીલા) સહન કરી શકે છે, પરંતુ કોઈ પણ જાતની આશા રાખ્યા વગર વચનરૂપી કાંટા જે સહન કરે છે તે પૂજ્ય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुसावाओ य लोगम्मि सव्वसाहूहिं गरहिओ ।
अविस्सासो य भूयाणं तम्हा मोसं विवज्जए ॥

Telling a lie is condemned by all the saints in the world. It creates a world of distrust for people. Therefore, one should avoid telling a lie.

इस लोक में मृषावाद (असत्य वचन) सब साधुओं द्वारा निंदित है और वह प्राणियों के लिए अविश्वसनीय है । इस लिए असत्य वचन का त्याग करें ।

આ લોકમાં મૃષાવાદ (અસત્ય વચન) સર્વ સાધુ પુરુષો વડે વખોડાયેલ છે તથા સર્વ લોકોના મનમાં તે અવિશ્વાસ જન્માવનાર છે. માટે અસત્ય વચનનો ત્યાગ કરવો.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्कसे ।
सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्च तवसि बुद्धिए ॥

Never hate or humiliate others and never show your superiority. Never boast of your scriptural knowledge, gains, caste or community, penance and intellect.

औरों का तिरस्कार न करें । अपना उत्कर्ष न दिखाएँ । श्रुतज्ञान, लाभ, जाति, तप और बुद्धि का मद न करें ।

બીજાઓનો તિરસ્કાર ન કરવો તથા પોતાનું ચડિયાતાપણું ન બતાવવું. પોતાનાં શ્રુતજ્ઞાન, લાભ, જાતિ, તપ અને બુદ્ધિનું અભિમાન ન કરવું.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवण्णवायं च परम्मुहस्स
पचक्खओ पडिणीयं च भासं ।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च
भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥

Those who do not backbite others, use violent words in their presence and who do not speak uncompromising or unpleasant language are always respected.

जो पीछे से निंदा नहीं करता, जो किसीके सामने विरोधी वचन नहीं कहता, जो निश्चयकारी (आग्रही) और अप्रिय--कारिणी भाषा नहीं बोलता वह सदा पूज्य है ।

જે પાછળથી બીજાની નિંદા નથી કરતા, જે કોઈની હાજરીમાં વિરોધવાળાં વચન નથી બોલતા, જે નિશ્ચયકારી (આગ્રહી) અથવા અપ્રિયકારી ભાષા નથી બોલતા તે સદા પૂજ્ય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तवतेणे वइतेणे रूवतेणे य जे नरे ।
आयार भावतेणे य कुव्वई देवकिब्बिसं ॥

A person who deceives or beguiles others in the matters of penance, speech, complextion, behaviour and feelings becomes a Kilbish, i.e. a deity of an inferior category, in the next birth.

जो मनुष्य तप का चोर, वाणी का चोर, रूप का चोर, आचार का चोर और भाव का चोर होता है वह मृत्यु के बाद किल्बिषिक (निम्न कोटिका) देव होता है ।

જે મનુષ્ય તપનો ચોર, વચનનો ચોર, રૂપનો ચોર, આચારનો ચોર અને ભાવનો ચોર હોય છે તે કિલ્બિષિક (નિમ્ન કોટિનો) દેવ થાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहेव डहरं व महल्लगं वा
इत्थी पुमं पव्वइयं गिहिं वा ।
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा
थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥

Whether a child or an elderly person, a man or a woman, a monk or a householder — whoever he or she may be, but the one who neither backbites nor hates others and who neither loses temper nor becomes arrogant, commands respect.

बालक हो या वृद्ध, स्त्री हो या पुरुष, दीक्षित हो या गृहस्थ, जो निन्दा नहीं करता, तिरस्कार नहीं करता और गर्व तथा क्रोध का त्याग करता है वह पूज्य है ।

બાળક હોય કે મોટા માણસ, સ્ત્રી હોય કે પુરુષ, દીક્ષિત હોય કે ગૃહસ્થ, ગમે તે હોય, પરંતુ જેઓ કોઈની નિંદા કરતા નથી કે તિરસ્કાર કરતા નથી, તેમ જ જેઓ ક્રોધ કે માનનો ત્યાગ કરે છે તેઓ પૂજ્ય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समावयंता वयणाभिधाया
कण्णंगया दुम्मणियं जणंति ।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे
जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥

Attacks in the form of words pierce the ears and produce disgust in the mind, but those who are spiritually brave and have self-control bear all these, knowing that it is their religious duty to do so and this is why they become respectable.

सामने से आते हुए वचन के प्रहार कानों तक पहुँच कर मानसिक कष्ट उत्पन्न करते हैं । लेकिन जो धर्ममार्ग में शूर है, जितेन्द्रिय है और 'यह मेरा धर्म है' ऐसा मानकर सहन करता है वह पूज्य है ।

સામેથી આવતા વચનરૂપી પ્રહારો કાનમાં વાગે છે ત્યારે તે મનમાં ખેદ ઉત્પન્ન કરે છે, પરંતુ જેઓ ધર્મમાર્ગમાં શૂરવીર છે અને જિતેન્દ્રિય છે તથા 'આ મારો ધર્મ છે' એમ માનીને તે સહન કરે છે તેઓ પૂજ્ય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंग--पच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं ।
इत्थीणं तं न निज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥

A monk should abstain from staring at the physique or the parts of the body of women. He should not get interested in listening to their sweet words or should not give any attention to their amorous glances. He should not even think of all these, because they are likely to arouse his sex-instinct.

स्त्रियों के अंग, प्रत्यंग, सुंदर स्वरूप, मधुर वचन और नयन—कटाक्ष को न देखें और उनकी और ध्यान न दें, क्योंकि ये सब कामराग की वृद्धि करनेवाले हैं ।

સ્ત્રીઓનાં અંગપ્રત્યંગ, સુંદર બાંધો, મધુર વચન અને નયન-કટાક્ષ નિહાળવાં નહિ તથા તેનો વિચાર પણ કરવો નહિ, કારણ કે એ કામરાગને વધારનાર છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाए पेहाए परिव्वयंतो
सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।
न सा महं नो वि अहं पि तीसे
इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥

While practising equanimity, if the mind loses confidence in self-control, imagine that — `the objects of material pleasures are not mine and I do not belong to them', and thus you will get detached from them.

समदृष्टिपूर्वक विचरते हुए भी यदि कदाचित् मन संयम से बाहर निकल जाये तो — 'ये भोगपदार्थ मेरे नहीं हैं और में उन का नहीं हूँ' — इस प्रकार सोचकर उनके प्रति होनेवाले राग को दूर करें ।

સમદૃષ્ટિપૂર્વક વિચરતાં વિચરતાં મન કદાચ જો સંયમમાંથી બહાર નીકળી જાય તો, 'આ ભોગપદાર્થ મારા નથી અને હું તેમનો નથી' – એવો વિચાર કરીને એના પ્રત્યેનો રાગ દૂર કરવો.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउक्खयं चेव अबुज्झमाणे
ममाइ से साहसकारि मंदे ।
अहो य राओ परितप्पमाणे
अट्ठेसु मूढे अजरामरेव्व ॥

A foolish and rash person who does not know that his life will ultimatly be over, always keeps on saying : `This is mine. This is mine.' He tortures himself day and night for the sake of wealth, as if he would never have old age and death.

अपनी आयुष्य का क्षय हो रहा है यह न समझनेवाला मूर्ख और अविचारी साहस करनेवाला मनुष्य 'यह मेरा है; यह मेरा है' — ऐसा बोलता रहता है । वह अर्थप्राप्ति के लिए दिनरात परिताप सहन करता है । वह भ्रम में रहता है कि उसके लिए कभी जरा और मृत्यु हैं ही नहीं ।

પોતાના આયુષ્યનો ક્ષય થઈ રહ્યો છે એવું ન જાણનાર મૂર્ખ અને અવિચારી સાહસ કરનાર માણસ 'આ મારું છે; આ મારું છે' એમ કર્યા કરે છે. અર્થપ્રાપ્તિ માટે તે દિવસ અને રાત ઘણો પરિતાપ સહન કરે છે, જાણે કે પોતે અજર અને અમર ન હોય !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणीयं भत्तपाणं तु खिप्पं मयविवड्ढणं ।
बंभचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥

Rich food arouses passions quickly. Therefore, a monk who is keenly interested in practising the vow of celibacy should always avoid such rich food.

स्निग्ध भोजन कामवासना को शीघ्र बढ़ाता है । इस लिए ब्रह्मचर्य व्रत में रत रहने वाला मुनि स्निग्ध भोजन का सदा त्याग करे ।

સ્નિગ્ધ ભોજન કામવાસનાને જલદી વધારનાર નીવડે છે. એટલે બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું હોંશથી પાલન કરવા ઇચ્છતા મુનિએ એવા ભોજનનો કાયમને માટે ત્યાગ કરવો જોઇએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा बिडालावसहस्स मूले
न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे
न बंभयारिस्स खमो निवासो ॥

It is not advisable for mice to live near a dwelling place of a cat. Similarly, it is not desirable for a person practising celibacy to stay in a house inhabited by women.

જૈસે બિલ્લી કે નિવાસસ્થાન કે પાસ ચૂહોં કા રહના ઠીક નહીં હોતા વૈસે હી સ્ત્રિયોં કી બસ્તી કે પાસ બ્રહ્મચારી કા રહના ઠીક નહીં હોતા ।

જેમ બિલાડીઓના નિવાસસ્થાન પાસે રહેવું તે ઉંદરો માટે યોગ્ય નથી, તેમ જે ઘરમાં સ્ત્રીઓનો નિવાસ હોય તે ઘરમાં રહેવું બ્રહ્મચારી માટે યોગ્ય નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खेत्त वत्थुं हिरण्णं च पुत्तदारं च बंधवा ।
चइत्ता णं इमं देहं गन्तव्वमवसस्स मे ॥

A man should realise that some day he certainly has to leave this world, leaving behind his land and estate, house and property, gold and ornaments, wife and children, relatives and friends, and even his own body.

मनुष्य को यह समझना चाहीए कि 'एक दिन मुझे जमीन, घर, सोना, संतान, स्त्री, बांधव और इस शरीर को भी छोड़ कर अवश्य चले जाना है ।'

માણસે સમજવું જોઇએ કે : 'એક દિવસ મારે મારાં પોતાનાં જમીન અને ઘર, સોનું અને ઝવેરાત, સ્ત્રી અને સંતાનો, સગાં અને સંબંધીઓને છોડીને અને મારા પોતાના દેહને પણ છોડીને અવશ્ય ચાલ્યા જવાનું છે.'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थावरं जंगमं चेव धणं धन्नं उवक्खरं ।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं नालं दुक्खाउ मोअणे ॥

When a man is suffering as a result of his past Karmas, neither his movable and immovable property, nor his money, nor the food-grain and other materials have any capacity to free him from the misery.

स्थावर और जंगम संपत्ति, धन, धान्य, चीज़वस्तु—ये सभी पदार्थ कर्मों के कारण दु:खी प्राणी को दु:खमुक्त करने में समर्थ नहीं होते ।

કર્મના વિપાકના પરિણામે માણસ જ્યારે દુ:ખી થાય છે ત્યારે સ્થાવર અને જંગમ મિલકત, ધન, ધાન્ય, ચીજવસ્તુઓ એને દુ:ખમાંથી છોડાવવા માટે શક્તિમાન બનતાં નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वालुयाकवले चेव निरस्साए उ संजमे ।
असिधारागमणं चेव दुक्करं चरिउं तवो ॥

To practise self-control is tasteless like a morsel of sand. To practise penance is as difficult as to walk on the edge of a sword.

संयमपालन बालू के कौर की तरह नीरस है । तप का आचरण करना तलवार की धार पर चलने जैसा दुष्कर है ।

સંયમનું પાલન રેતીના કોળિયા જેવું નીરસ છે. તેવી જ રીતે તપશ્ચર્યાનો માર્ગ પણ તલવારની ધાર ઉપર ચાલવા જેટલો દુષ્કર છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा भुयाहिं तरिउं दुक्करं रयणायरो ।
तहा अणुवसन्तेणं दुक्करं दमसागरो ॥

Just as it is very difficult to cross the ocean swimming with arms, similarly, it is very difficult for one who is not pacified, to cross the ocean of self-control.

जैसे समुद्र को भुजाओं से पार करना बहुत ही कठिन है, वैसे ही उपशमहीन व्यक्ति के लिए संयमरूप समुद्र को पार करना बहुत कठिन है ।

જેમ ભુજાઓથી સમુદ્ર તરી જવો દુષ્કર છે, તેમ ઉપશાંત નહિ થયેલા જીવ માટે સંયમરૂપી સાગર તરી જવો દુષ્કર છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो सहस्सं सहस्साणं मासे मासे गवं दए ।
तस्सावि संजमो सेओ अदिंतस्स वि किंचणं ॥

The self-control of a man who does not give anything in charity is far better than a man who may give one million cows in charity every month.

दान में कुछ भी न देनेवाले संयमी मनुष्य का संयम, प्रति मास दस लाख गायों का दान देनेवाले मनुष्य से श्रेष्ठ होता है ।

દાનમાં કશું ન આપનાર સંયમી માણસનો સંયમ દર મહિને દસ લાખ ગાયોનું દાન આપનાર માણસ કરતાં શ્રેષ્ઠ છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दाराणि च सुया चेव मित्ता य तह बंधवा ।
जीवन्तमणुजीवन्ति मयं नाणुवयंति य ॥

Wives, sons, friends and relatives follow a man till he is alive. None of them follow him after death.

पत्नियाँ, पुत्र, मित्र और बांधव, जब तक व्यक्ति जीवंत है तब तक ही साथ में रहते हैं । मृत्यु के बाद वे पीछे नहीं आते ।

પત્નીઓ, પુત્રો, મિત્રો અને બંધુઓ જીવતાંને જ અનુસરે છે. મૃત્યુ થયા પછી કોઈ પાછળ આવતું નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नीहरन्ति मयं पुत्ता पियर परमदुक्खिया ।
पियरो वि तहा पुत्ते बन्धू रायं तवं चरे ॥

Much bereaved sons remove the dead body of their father from the house. Similarly, the father removes the dead body of his son. The same is the case with relatives. Therefore, O king ! practise penance.

पुत्र अपने मृत पिता के शरीर को परम दु:ख के साथ घर से बाहर ले जाते हैं । इसी तरह पिता भी अपने मृत पुत्र को बाहर ले जाते है । बंधुओं का भी वैसा ही होता है । इस लिए हे राजन् ! तू तप कर ।

મૃત્યુ પામેલા પિતાના શબને અત્યંત દુ:ખી થયેલા પુત્રો ઘરની બહાર લઈ જાય છે. તેવી રીતે પિતા પણ મૃત્યુ પામેલા પુત્રના શબને બહાર લઈ જાય છે. સગાં અને સંબંધીઓનું પણ એમ જ થાય છે. એટલા માટે હે રાજન્ ! તું તપ કર.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगब्भूए अरण्णे वा जहा उ चरई मिगे ।
एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य ॥

Just as a deer moves about in a forest all alone, in the same way I shall also move on the path of religion all alone, practising self-control and penance.

जैसे जंगल में हरिण अकेला विचरता है, वैसे मैं भी संयम और तप समेत धर्म का आचरण करूँगा ।

જેમ અરણ્યમાં મૃગ એકલો વિચરે છે, તેમ હું પણ સંયમ અને તપ વડે ધર્મમાં એકાકી વિચરીશ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वं जगं जइ तुहं सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं नेव ताणाय तं तव ॥

If the whole world together with all its wealth is given to you, even then, you will not find that adequate. It will not be able to protect you.

यदि पूरा जगत तुम्हें मिल जाए और जगत का सारा धन तुम्हारा हो जाए, तो भी तुम्हारे लिए वह अपर्याप्त होगा और तुम्हें वह रक्षण नहीं दे सकेगा ।

કદાચ જો આખું જગત તને મળી જાય અને તેમાં રહેલું સર્વ ધન તારું થઈ જાય તો પણ તે તારા માટે અપર્યાપ્ત છે. તે તારું રક્ષણ કરી શકશે નહિ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माया पिया ण्हुसा भाया
भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
नालं ते मम ताणाय
लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥

Mother, father, daughters-in-law, brothers, wife and sons will not be able to give any protection when I am suffering for my own evil deeds.

जब में अपने कर्मों से दु:खी होता हूं, तब माता, पिता, पुत्रवधू, भाई, भार्या और पुत्र – ये सभी मेरी रक्षा करने में समर्थ नहीं होते ।

માતા, પિતા, પુત્રવધૂઓ, ભાઈઓ, ભાર્યા અને પુત્રો–એ બધાં મારાં કર્મોનું દુ:ખ ભોગવતી વખતે મારું રક્ષણ કરવાને સમર્થ નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं
जस्स च ऽ त्थि पलायणं ।
जो जाणे न मरिस्सामि
सो हु कंखे सुए सिया ॥

He who has friendship with death, who is capable of escaping from death, or who knows that he will never die, can desire to see the next day.

मृत्यु के साथ जिस की मैत्री हो, जो मृत्यु के मुख से पलायन कर सकता हो और जो जानता हो कि 'मैं कभी नहीं मरूंगा' वह आनेवाली कल की इच्छा कर सकता है ।

જેને મૃત્યુ સાથે મૈત્રી હોય, જે મૃત્યુના પંજામાંથી છૂટીને ભાગી જવાનું સામર્થ્ય ધરાવતો હોય અને 'હું ક્યારેય મરીશ નહિ' એવું જે જાણતો હોય તે જ આવતી કાલની ઇચ્છા કરી શકે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा सूई ससुत्ता पडिआ न विणस्सइ ।
तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ ॥

Just as a threaded needle does not get lost even when it falls on the ground, similarly the soul with knowledge of scriptures is not lost in the world of birth and death.

जिस प्रकार धागा पिरोई हुई सुई, गिरने पर भी गुम नहीं होती, उसी प्रकार श्रुतज्ञानी जीव संसार में रहने पर भी विनष्ट नहीं होता ।

જેમ દોરો પરોવેલી સોય પડી જાય તો પણ ખોવાઈ જતી નથી, તેમ શ્રુતજ્ઞાની જીવ સંસારમાં રખડતો નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोहे माणे माया लोभे पेज्जे तहेव दोसे य ।
हासे भय अक्खाइय उपघाए निस्सिया दसमा ॥

The language used with the intention of anger, ego, deceit, greed, attachment, hatred, jest, fear, imagination and violence is regarded as untrue language.

क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, हास्य, भय, कल्पना और हिंसा—का आश्रय लेकर बोली जानेवाली भाषा असत्य भाषा है ।

ક્રોધ, માન, માયા, લોભ, રાગ, દ્વેષ, હાસ્ય, ભય, કલ્પના અને હિંસાનો આશ્રય લઈ બોલવામાં આવતી ભાષા તે અસત્ય ભાષા છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि ।
सच्चस्स आणाए से उवट्ठिए मेहावी मारं तरइ ॥

O Man ! know what truth is. The wise man who always obeys the command of truth conquers death.

हे पुरुष ! तू सत्य को अच्छी तरह जान ले ! जो सत्य की आज्ञा में उपस्थित है वह मेधावी मनुष्य मृत्यु के पार हो जाता है ।

હે પુરુષ ! તું સત્યને સારી રીતે જાણી લે. સત્યની આજ્ઞામાં ઉપસ્થિત રહેલો મેધાવી મનુષ્ય મૃત્યુને તરી જાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रमए पंडिए सासं हयं भद्दं व वाहए ।
बालं सम्मइ सासन्तो गलियस्सं व वाहए ॥

A horse-rider enjoys riding a noble horse. Similarly, the Guru enjoys instructing intelligent disciples. A horse-rider gets tired of riding a bad horse. Similarly, the Guru gets tired of instructing dull disciples.

जैसे उत्तम घोडे को हाँकता हुआ सवार आनन्द पाता है, वैसे ही पंडित शिष्य पर अनुशासन करते हुए गुरु आनन्द पाते हैं । जैसे दुष्ट घोडे को हाँकता हुआ सवार खिन्न होता है, वैसे ही अविनीत शिष्य पर अनुशासन करते हुए गुरु खिन्न होते हैं ।

સારા ઘોડા ઉપર સવારી કરનારને ઘોડો ચલાવવામાં જેમ આનંદ આવે છે, તેમ ડાહ્યા શિષ્યો ઉપર અનુશાસન કરવામાં ગુરુને આનંદ થાય છે. જેમ ગળિયા ઘોડાને ચલાવવામાં સવારી કરનાર થાકી જાય છે, તેમ મૂર્ખ શિષ્યો ઉપર અનુશાસન કરતાં ગુરુ પણ થાકી જાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसयं खलु सो कुणई जो मग्गे कुणाई घरं ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुविज्ज सासयं ॥

One who builds a house anywhere on the path is indulging in a doubtful activity. One should build a permanent house only at one's destination.

जो रास्ते में कहीं भी अपना घर बनाता है तो वह संदेहयुक्त होता है । अपना घर तो वहीं बनाना चाहिए जहां पहुँच कर मुकाम करने की इच्छा हो ।

જો કોઈ રસ્તામાં ગમે ત્યાં ઘર બંધાવે તો તે સંદેહભરેલું કાર્ય ગણાય. જ્યાં પહોંચવું છે તે અંતિમ મુકામે જ કાયમનું ઘર બાંધવું જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न वि मुंडिएण समणो न ओंकारेण बंभणो ।
न मुनि रण्णवासेणं कुसचीरेण न तावसो ॥

One does not become a monk only by shaving one's head; one does not become a Brahmana only by chanting Aum; one does not become an ascetic only by living in the woods and one does not become a Tapasa only by wearing bark-garments.

मात्र शिरमुंडन से कोई श्रमण नहीं होता । सिर्फ ॐ का जाप करने से कोई ब्राह्मण नहीं होता । केवल अरण्य में रहने से कोई मुनि नहीं होता । और कुश का वस्त्र पहनने मात्र से कोई तापस नहीं होता.

ફક્ત મસ્તક મુંડાવવાથી શ્રમણ થવાતું નથી; ફક્ત ૐકાર બોલવાથી બ્રાહ્મણ થવાતું નથી; ફક્ત અરણ્યમાં રહેવાથી મુનિ થવાતું નથી અને ફક્ત કુશનું વસ્ત્ર ધારણ કરવાથી તાપસ થવાતું નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समयाए समणो होइ बंभचेरेण बंभणो ।
नाणेण उ मुनि होइ तवेण होइ तावसो ॥

One becomes a monk by equanimity; a Brahmana by practising celibacy; an ascetic by acquiring knowledge and a Tapasa by penance.

समता से श्रमण होता है । ब्रह्मचर्य के पालन से ब्राह्मण होता है । ज्ञान से मुनि होता है और तपसे तापस होता है ।

સમતાથી સાધુ થવાય છે; બ્રહ્મચર્યના પાલનથી બ્રાહ્મણ થવાય છે; જ્ઞાનપ્રાપ્તિથી મુનિ થવાય છે અને તપશ્ચર્યા કરવાથી તાપસ થવાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयणं जे करंति भावेणं ।
अमला असंकिलिट्ठा ते होंति परित्तसंसारी ॥

Those who have love for and faith in the teachings of the Jina, who practise them with devotion, who are free from the dirt of Mithyatva and also free from the tortures of passions, limit their Samsara i.e. the cycle of birth and death.

जो जिनवचन में अनुरक्त हैं तथा जिनवचनों का आचरण भावपूर्वक करते हैं और जो मिथ्यात्व के मल से और संक्लेश से रहित हैं वे अल्प संसार – (जन्म-मरण) वाले हो जाते हैं ।

જેઓ જિનવચનમાં અનુરક્ત (શ્રદ્ધાવાળા) છે, જેઓ જિનવચન અનુસાર ક્રિયાઓ ભાવપૂર્વક કરે છે, જેઓ મિથ્યાત્વના મલથી રહિત છે તથા જેઓ રાગદ્વેષના સંકલેશથી રહિત છે, તેઓ મર્યાદિત સંસાર (ભવભ્રમણ)વાળા બને છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोहविजएणं भंते । जीवे किं जणयइ ?

कोहविजएणं खन्तिं जणयइ । कोहवेयणिज्जं

कम्मं न बंधइ, पूव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥

O Bhagavan ! What does the soul acquire by conquering anger ?

By conquering anger the soul acquires the quality of forgiveness. He does not do any Karma caused by anger and becomes free from the past Karmas.

भन्ते । क्रोध-विजय से जीव क्या प्राप्त करता है ?

क्रोध-विजय से वह क्षमा का उपार्जन करता है । वह क्रोध से उत्पन्न होनेवाला कर्मबंधन नहीं करता और पूर्वबद्ध कर्मों को क्षीण करता है ।

હે ભગવાન ! ક્રોધને જીતવાથી જીવ શું ઉપાર્જન કરે છે ?

ક્રોધને જીતવાથી જીવ ક્ષમાના ગુણનું ઉપાર્જન કરે છે. ક્રોધથી ઉત્પન્ન થતાં કર્મોને તે બાંધતો નથી અને પૂર્વે જે કર્મ બાંધ્યાં હોય તેનો ક્ષય કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणविजएणं भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

माणविजएणं मद्दवं जणयइ । माणवेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पूव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥

Oh Bhagavan ! What does the soul acquire by conquering ego ?

By conquering ego the soul acquires the quality of tenderness. He does not do any Karma caused by ego and becomes free from the past Karmas.

भन्ते । मान-विजय से जीव क्या प्राप्त करता है ?

मान-विजय से वह मृदुता को प्राप्त करता है । वह मान से उत्पन्न होने वाला कर्मबंधन नहीं करता और पूर्वबद्ध कर्मों को क्षीण करता है ।

હે ભગવાન ! માનને જીતવાથી જીવ શું પામે છે ?

માનને જીતવાથી જીવ મૃદુતા પામે છે. માનથી ઉત્પન્ન થતાં કર્મોને તે બાંધતો નથી અને પૂર્વે જે કર્મ બાંધ્યાં હોય તેનો ક્ષય કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मायाविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?
मायाविजएणं अज्जवं जणयइ । मायावेयणिज्जं
कम्मं न बंधइ, पूव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥

O Bhagavan ! What does the soul acquire by conquering deceit ?

By conquering deceit the soul acquires the quality of straightforwardness. He does not do any Karma caused by deceit and becomes free from the past Karmas.

भन्ते ! माया-विजय से जीव क्या प्राप्त करता है ?

माया-विजय से जीव सरलता को प्राप्त करता है । वह माया से उत्पन्न होनेवाला कर्मबंधन नहीं करता और पूर्वबद्ध कर्मों को क्षीण करता है ।

હે ભગવાન ! માયાને જીતવાથી જીવ શું પામે છે ?

માયાને જીતવાથી જીવ સરળતા પામે છે. માયાથી ઉત્પન્ન થતાં કર્મોને તે બાંધતો નથી અને પૂર્વે જે કર્મ બાંધ્યાં હોય તેનો ક્ષય કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोभविजएणं भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

लोभविजएणं संतोसं जणयइ । लोभवेयणियज्जं कम्मं न बंधइ, पूव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥

O Bhagavan ! What does the soul acquire by conquering greed ?

By conquering greed the soul acquires the quality of contentment. He does not do any Karma caused by greed and becomes free from the past Karmas.

भन्ते ! लोभ-विजय से जीव क्या प्राप्त करता है ?

लोभ-विजय से जीव संतोष को प्राप्त करता है । वह लोभ ये उत्पन्न होनेवाला कर्मबंधन नहीं करता और पूर्वबद्ध कर्मों को क्षीण करता है ।

હે ભગવાન ! લોભને જીતવાથી જીવ શું પામે છે ?

લોભને જીતવાથી જીવ સંતોષ પામે છે. લોભથી ઉત્પન્ન થતાં કર્મોને તે બાંધતો નથી અને પૂર્વે જે કર્મ બાંધ્યાં હોય તેનો ક્ષય કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न चित्ता तायए भासा कुओ विज्जाणुसासणं ।
विसन्ना पावकम्मेहिं बाला पंडियमाणिणो ॥

Knowledge of various languages does not give shelter to human beings. How can training in various arts protect them ? They think that they are highly learned persons, but in fact they are ignorant, if they are committing sinful deeds.

विविध भाषाओं का ज्ञान जीव को रक्षण नहीं देता । विद्या का अनुशासन भी कहां शरणरूप होता है ? अपने को पंडित मानने वाले वे पापकर्मों से मलिन हुए अज्ञानी ही हैं ।

જુદી જુદી ભાષાઓનું જ્ઞાન જીવને શરણરૂપ થતું નથી. વિદ્યા-મંત્રની શિસ્ત પણ ક્યાંથી શરણરૂપ થાય ? તેઓ ભલે પોતાને પંડિત માને, પરંતુ જો પાપકર્મથી ખરડાયેલા હોય તો તેઓ અજ્ઞાની જ છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुणिया भावं साणस्स सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठविज्ज अप्पाणं इच्छंतो हियमप्पणो ॥

An indisciplined person is compared to a dog and a pig. Realising the sense of this comparison, a person who is keen on his welfare should establish himself firmly on the path of discipline.

अविनयी मनुष्य कुत्ते और सूअर की तरह होता है । इस भाव को समझ कर अपना हित चाहने वाला मनुष्य अपने आप को विनय में स्थापित करे ।

અવિનયી માણસને કૂતરા અને ભૂંડ સાથે સરખાવવામાં આવે છે. એનો ભાવ સમજીને પોતાનું હિત ઇચ્છનારે પોતાના આત્માને વિનયમાર્ગમાં સ્થાપવો જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमणुन्नसमुप्पायं दुक्खमेव विजाणिया ।
समुप्पायमजाणंता कहं नायंति संवरं ॥

One must know that unhappiness arises from one's own evil deeds. How can those who do not know the cause of unhappiness, determine the ways to prevent it ?

जानना चाहिए कि अशुभ कर्म से ही दु:ख उत्पन्न होता है । जो दु:ख की उत्पत्ति का कारण ही नहीं जानते वह दु:ख के निवारण का उपाय कैसे जानेंगे ?

અશુભ કર્મથી દુ:ખ ઉત્પન્ન થાય છે એમ જાણવું જોઈએ. જેઓ દુ:ખની ઉત્પત્તિનું કારણ જાણતા નથી તેઓ દુ:ખના નિવારણનો ઉપાય કેવી રીતે જાણી શકે ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मज्जियं च ववहारं बुद्धेहायरियं सया ।
तमायरंतो ववहारं गरहं नाभिगच्छई ॥

If a man follows the course of conduct which conforms to religion and which has always been pursued by wise men, he will never be blamed.

जो व्यवहार धर्म से प्रमाणित हुआ है और जिसका ज्ञानी पुरुषों ने सदा आचरण किया है ऐसे व्यवहार का आचरण करनेवाले की निंदा नहीं होती ।

જે વ્યવહાર ધર્મ અનુસાર છે અને જ્ઞાની પુરુષોએ જેનું સદા આચરણ કર્યું છે તેવા વ્યવહારનું આચરણ કરનારની નિંદા થતી નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निसन्ते सिया अमुहरी बुद्धाणं अन्तिए सया ।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा निरट्ठाणि उ वज्जए ॥

A devout disciple should always remain duly quiet. He should not be talkative. He should learn spiritual matters by always remaining in the company of wise men and he should avoid interest in useless matters.

साधक सदा शान्त रहे, वाचालता न करे, सदा ज्ञानी पुरुष के समीप रहे, उन के पास अर्थयुक्त बातें सीखे और निरर्थक बातों को छोड़ दे ।

સાધકે અત્યંત શાંત રહેવું; અસંબદ્ધ બોલવું નહિ; જ્ઞાનીજનોની સમીપે રહેવું; તેમની પાસેથી પરમાર્થયુક્ત વાતો શીખવી અને નિરર્થક બાબતોને છોડી દેવી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आलवंते लवंते वा न निसीएज्ज कयाइ वि ।
चइऊणमासणं धीरो जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥

A good disciple should leave his seat at once on being called by his preceptor, no matter how often this happens. He should then listen to him modestly.

गुरु के एक बार बुलाने पर या बार–बार बुलाने पर भी धीर शिष्य कभी भी बैठा न रहे । अपना आसन छोड़कर, उन के पास जा कर, वे जो कहें वह विनय पूर्वक सुनना चाहीए ।

પોતાના ગુરુ એક વાર બોલાવે કે ઘડી ઘડી બોલાવે, પરંતુ ધીર શિષ્યે પોતાના આસન ઉપર ત્યારે બેસી ન રહેવું જોઈએ. પોતાનું આસન છોડીને, તેમની પાસે જઈને તેઓ શું કહે છે તે વિનયપૂર્વક સાંભળવું જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आणानिद्देसकरे गुरुणमुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ॥

He is called a disciplined pupil, who obeys the orders of his teacher, always remains with him and is capable of reading the thoughts and expressions of his teacher.

जो शिष्य गुरु की आज्ञा और निर्देश का पालन करता है, गुरु के निकट रहता है, गुरु के इंगित और आकार को समझता है वह विनीत शिष्य कहलाता है ।

જે શિષ્ય ગુરુની આજ્ઞા અને નિર્દેશનું પાલન કરનાર હોય, જે ગુરુની નિકટ રહેનાર હોય અને જે ગુરુના ઇંગિત અને આકારથી એમના મનોભાવને જાણનાર હોય તે શિષ્ય વિનીત કહેવાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे आयरियउवज्झायाणं सुस्सूसावयणंकरा ।
तेसिं सिक्खा पवड्ढंति जलसित्ता इव पायवा ॥

The Knowledge of the disciples who serve their teachers and obey their instructions sincerely, grows like trees sprinkled with water.

जो शिष्य आचार्य और उपाध्याय की शुश्रूषा और आज्ञापालन करते हैं उन की शिक्षा जल से सींचे हुए वृक्ष की तरह बढ़ती है ।

જે શિષ્યો આચાર્ય અને ઉપાધ્યાયની સેવા કરે છે તથા તેમનાં વચન અનુસાર કાર્ય કરે છે, તેમનું જ્ઞાન જળથી સિંચાયેલાં વૃક્ષોની જેમ વૃદ્ધિ પામે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा अग्गिसिहा दित्ता पाउं होइ सुदुक्करा ।
तहा दुक्करं करेउं जे तारुण्णे समणत्तणं ॥

Just as it is very difficult to swallow a burning flame of fire, similarly, monkhood, particularly in young age, is extremely difficult.

जैसे प्रज्वलित अग्नि-शिखा को पीना दुष्कर है वैसे ही यौवन में श्रमण धर्म का पालन करना कठिन है ।

જેમ અગ્નિની બળતી જ્યોતનું પાન કરવું દુષ્કર છે, તેમ તરુણ વયમાં સાધુપણાનું પાલન કરવું અત્યંત કઠિન છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा दुक्खं भरेउं जे होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे कीबेणं समणत्तणं ॥

Just as it is very difficult to fill a gunny bag with air, similarly monkhood is extremely difficult for a weak person.

जैसे थैले को हवा से भरना कठिन कार्य है वैसे ही निर्बल व्यक्ति के लिए श्रमण धर्म का पालन करना अत्यंत कठिन कार्य है ।

જેમ કોથળામાં વાયુ ભરવો એ અત્યંત મુશ્કેલ કાર્ય છે, તેમ નબળા માણસ માટે સાધુપણાનું પાલન કરવું એ અત્યંત મુશ્કેલ કાર્ય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नापुट्ठो वागरे किंचि पुट्ठो वा नालियं वए ।
कोहं असच्चं कुव्वेज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥

A wise disciple should not respond unless he is asked. When he is asked something he should never tell a lie. He should control anger. He should bear pleasant and unpleasant words with equanimity.

विनीत शिष्य बिना पूछे कुछ भी न बोले । पूछने पर असत्य न बोले । क्रोध आ जाए तो उसे निष्फल करे । प्रिय और अप्रिय वचनों को समभाव से धारण करे ।

વિનીત શિષ્યે પૂછ્યા વિના કશું બોલવું નહિ. પૂછવામાં આવે ત્યારે તેણે અસત્ય ન બોલવું. તેણે પોતાના ક્રોધને નિષ્ફળ બનાવી દેવો. પ્રિય કે અપ્રિય વચન તેણે સમભાવથી સાંભળી લેવાં.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणगुत्तयाए णं भंते । जीवे किं जणयइ ?

मणगुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ ।

एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ॥

O Bhagavan ! what does the soul achieve by controlling the mind ?

By controlling the mind the soul achieves the concentration of mind. The soul with the concentration of mind controls the senses.

भन्ते ! मनोगुप्ति से जीव क्या प्राप्त करता है ?

मनोगुप्ति से जीव को एकाग्रता प्राप्त होती है । एकाग्र चित्त वाला मनोगुप्त जीव संयम की आराधना करनेवाला होता है ।

હે ભગવાન ! મનોગુપ્તિથી જીવ શું પામે છે ?

મનોગુપ્તિથી જીવ એકાગ્રતા પામે છે. એકાગ્ર ચિત્તવાળો મનોગુપ્ત જીવ સંયમનો આરાધક થાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वयगुत्तयाए णं भंते । जीवे किं जणयइ ?
वयगुत्तयाए णं निव्विकारत्तं जणयइ ।
निव्विकारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते
यावि भवइ ॥

O Bhagavan ! What does the soul achieve by controlling the speech ?

By controlling the speech the soul achieves mental steadiness and having achieved mental steadiness, the soul with controlled speech becomes qualified for self-realisation.

भन्ते ! वचन–गुप्ति से जीव क्या प्राप्त करता है ?

वचन–गुप्ति से जीव निर्विकार भाव प्राप्त करता है । निर्विकार वचनगुप्त जीव अध्यात्म योग के साधन से युक्त हो जाता है ।

હે ભગવાન ! વચનગુપ્તિથી જીવ શું પામે છે ?

વચનગુપ્તિથી જીવ નિર્વિકારપણું પામે છે. નિર્વિકારપણાથી વચનગુપ્ત જીવ અધ્યાત્મયોગના સાધનથી યુક્ત થાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कायगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?
कायगुत्तयाए संवरं जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते
पुणो पावासवनिरोहं करेइ ॥

O Bhagavan ! What does the soul achieve by controlling the body ?

By controlling the body the soul achieves Samvara, i.e. cessation of Karma, and with Samvara, the soul, with body-control, controls the influx of sinful Karmas.

भन्ते ! काय-गुप्ति से जीव क्या प्राप्त करता है ?
काय-गुप्ति से जीव संवर प्राप्त करता है । संवर से कायगुप्त जीव पापकर्म के आश्रवों का निरोध करता है ।

હે ભગવાન ! કાયગુપ્તિથી જીવ શું પામે છે ?
કાયગુપ્તિથી જીવ સંવર પામે છે. સંવરથી કાયગુપ્ત જીવ પાપાશ્રવનો નિરોધ કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी
खंतिक्खमे संजयबंभयारी ।
सावज्जजोगं परिवज्जयंतो
चरेज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥

A monk should have compassion for all beings. He should have forgiveness for all. He should restrain himself and observe celibacy. He should avoid all sinful activities. He should move about with control over his senses.

साधु सर्व जीवों के प्रति दयानुकंपावाला रहे । वह क्षमाभाव को धारण करनेवाला हो । वह संयमी और ब्रह्मचर्य का पालन करनेवाला हो । वह सावद्य योग का वर्जन करता हुआ, इन्द्रियों को संयम में रखते हुए विचरण करे ।

સાધુએ સર્વ જીવો પ્રત્યે દયા-અનુકંપાવાળા હોવું જોઈએ, સર્વ પ્રત્યે ક્ષમા ધારણ કરવી જોઈએ, સંયમમાં રહેવું જોઈએ, બ્રહ્મચર્યનું બરાબર પાલન કરવું જોઈએ, પાપકાર્યો સર્વથા છોડી દેવાં જોઈએ અને ઇન્દ્રિયોને સંયમમાં રાખી વિચરવું જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुं सुणेइ कण्णेहिं बहुं अच्छीहिं पेच्छई ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥

A monk may hear many things with his ears and he may see many things with his eyes, but it is not proper for him to tell others everything that he may have heard or seen.

मुनि कानों से बहुत कुछ सुनता है और आंखों से बहुत कुछ देखता है । किन्तु आँखों से देखा हुआ और कानों से सुना हुआ सब कुछ औरों को बता देना उस के लिए उचित नहीं ।

સાધુને કાનથી ઘણી વાતો સાંભળવા મળે છે અને આંખથી ઘણી વસ્તુ જોવા મળે છે. પરંતુ આંખથી જોયેલી કે કાનથી સાંભળેલી બધી વાતો બીજાને કહી દેવી તે સાધુ માટે ઉચિત નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थि एगं धुवं ठाणं लोगग्गंमि दुरारुहं ।
जत्थ नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेयणा तहा ॥

There is one eternal place on the top of the cosmos where there is no old age, death, disease or pain. But it is very difficult to reach there.

लोक के अग्रभाग में एक ऐसा ध्रुव स्थान है, जहां वृद्धावस्था, मृत्यु, व्याधि और वेदना नहीं है । किन्तु वहां पहुँच पाना बहुत कठिन है ।

લોકના અગ્રભાગ ઉપર એક ધ્રુવ સ્થાન છે. ત્યાં વૃદ્ધાવસ્થા, મૃત્યુ, રોગ કે વેદના નથી. પરંતુ ત્યાં પહોંચવું ઘણું અઘરું છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अलोलुए अक्कुहए अमायी
अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
नो भावए नो वि य भावियप्पा
अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥

Those who are not fond of different tastes, are not interested in showing miraculous tricks, are not deceitful, do not backbite others, do not show wretchedness, do not praise themselves or get themselves praised by others, and do not arouse undue curiosity among others, are respectable.

जो रसलोलुप नहीं होते, चमत्कार प्रदर्शित नहीं करते, माया नहीं करते, चुगली नहीं करते, दीनभाव से याचना नहीं करते, आत्मश्लाघा नहीं करते या करवाते और कुतूहल नहीं करते वे पूज्य हैं ।

જેઓ રસલોલુપ નથી, ચમત્કાર બતાવતા નથી, માયા કરતા નથી, ચાડી-ચુગલી કરતા નથી, દીનતા દાખવતા નથી, આત્મપ્રશંસા કરતા નથી કે બીજા પાસે કરાવતા નથી તથા કુતૂહલ કરતા નથી તેઓ પૂજ્ય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुसं परिहरे भिक्खू न य ओहारिणिं वए ।
भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया ॥

A monk should never tell a lie and should not use categorical language. He should avoid faulty language and should always abstain from deceit.

मुनि असत्य का त्याग करे । वह निश्चयात्मक भाषा न बोले, भाषा के दोषों को छोड़े और माया का सदा त्याग करे ।

મુનિએ અસત્ય ન બોલવું તથા નિશ્ચયાત્મક ભાષા ન વાપરવી. મુનિએ ભાષાના દોષો છોડી દેવા તથા માયા-કપટનો સદા ત્યાગ કરવો.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समरेसु अगारेसु संधीसु य महापहे ।
एगो एगित्थिए सद्धिं नेव चिट्ठे न संलवे ॥

When a person practising celibacy is alone, he should neither stand nor talk, with a woman if she is also alone, in the temples of Cupid or in a lonely house or in a small street between two houses or even on a big public road.

ब्रह्मचारी, कामदेव के मंदिरों में, एकान्त घरों में, दो घरों के बीच की संधियों में और राजमार्ग में अकेली स्त्री के साथ अकेला न खड़ा रहे और न बात करे ।

બ્રહ્મચારીએ કામદેવના મંદિરોમાં, એકાંત ઘરોમાં, બે ઘર વચ્ચેની ગલીમાં કે મોટા રસ્તા ઉપર, એકલી સ્ત્રી સાથે, પોતે એકલા ઊભા ન રહેવું કે તેની સાથે વાતચીત ન કરવી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुसासिओ न कुप्पेज्जा खंति सेवेज्ज पंडिए ।
खुड्डेहिं संसग्गिं हासं कीडं च वज्जए ॥

A learned disciple should not get upset at the strict discipline enforced by his preceptor. He should bear forgivness. He should avoid the company of inferior persons and keep himself away from jests and amusing behaviour.

पंडित शिष्य, गुरु के द्वारा अनुशासित होने पर क्रोध न करे, क्षमा को धारण करे, क्षुद्र व्यक्तियों से संसर्ग न करे और हास्य तथा क्रीडा न करे ।

પંડિત શિષ્યે ગુરુ દ્વારા કરાતા શિસ્તપાલન માટે ક્રોધ ન કરવો; ક્ષમા ધારણ કરવી; હલકા માણસોનો સંસર્ગ ન કરવો તથા હાસ્ય અને ક્રીડા છોડી દેવાં.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणपल्हाय जणणिं कामरागविवड्ढणिं ।
बंभचेररओ भिक्खू थीकहं तु विवज्जए ॥

A monk who is interested in practising the vow of celibacy should always avoid such stories of women that would create excitement in mind and increase sexual desire.

ब्रह्मचर्य व्रत में रत रहने वाला मुनि चित्त को उत्तेजित और क्षुब्ध करनेवाली तथा कामराग बढ़ाने वाली स्त्रीकथा का वर्जन करे ।

બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું પાલન કરવામાં રસ ધરાવનાર મુનિએ ચિત્તને ક્ષોભ પમાડે તથા કામવાસનાને વધારે એવી સ્ત્રીકથાનો ત્યાગ કરવો જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विरई अबंभचेरस्स कामभोगरसन्नुणा ।
उग्गं महाव्वयं बंभं धारेयव्वं सुदुक्करं ॥

It is not easy for a person who knows about the pleasure of sex to abstain from it. To practise the great vow of celibacy wholeheartedly is really very difficult.

कामभोग का रस जानने वाले व्यक्ति के लिए अब्रह्मचर्य की विरति करना और उग्र ब्रह्मचर्य महाव्रत को धारण करना बहुत ही कठिन है ।

કામભોગના રસને જાણવાવાળી વ્યક્તિ માટે અબ્રહ્મચર્યથી સાવ વિરક્ત થવું એ સહેલી વાત નથી. ઉગ્ર બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતનું પાલન કરવું અત્યંત દુષ્કર છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तथा लोगमत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥

After destroying all the Karmas and being free from Karmic dust, the soul attains liberation, rises to the top of the cosmos and remains eternally there as Siddha Bhagavan.

जब जीव सर्व कर्मों का क्षय कर, रजमुक्त बन कर सिद्धि को प्राप्त करता है तब वह लोक के अग्रभाग पर स्थित होता है और सिद्ध भगवान के रूप में शाश्वत रहता है ।

જ્યારે જીવ સર્વ કર્મનો ક્ષય કરી, રજરહિત બની સિદ્ધિને પ્રાપ્ત કરે છે ત્યારે તે લોકના અગ્રભાગ ઉપર સ્થિત થઈ સિદ્ધ ભગવાનરૂપે શાશ્વત રહે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जया जीवमजीवे या दो वि एए वियाणइ ।
तया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणइ ॥

When one knows both what is life and what is non-life, then one is able to know what the different types of existences are amongst the living beings.

जब मनुष्य जीव और अजीव—इन दोनों को जान लेता है तब वह सब जीवों की बहुविध गतियों को भी जान लेता है ।

જ્યારે મનુષ્ય જીવ અને અજીવ એ બંનેને જાણે છે ત્યારે તે સર્વ જીવોની બહુવિધ પ્રકારની ગતિને પણ જાણી શકે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं
कम्मं च मोहप्पभवं वयंति ।
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं
दुक्खं च जाईमरणं वयंति ॥

Attachment and hatred are the seeds of Karma. The wise men say that Karma is caused by delusion. Karma is the root of birth and death. The wise men say that the cycle of birth and death is unhappiness.

राग और द्वेष कर्म के बीज हैं और ज्ञानी कहते हैं कि कर्म, मोह से उत्पन्न होता है । कर्म, जन्म–मरण का मूल है । ज्ञानी पुरुष जन्म–मरण को दु:ख कहते हैं ।

રાગ અને દ્વેષ એ બંને કર્મનાં બીજ છે. કર્મ મોહથી ઉત્પન્ન થાય છે એમ જ્ઞાનીઓ કહે છે. કર્મ જન્મ–મરણનું મૂળ છે અને જ્ઞાનીઓ જન્મ–મરણને દુ:ખ કહે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं ठाणं सासयं वासं लोगग्गंमि दुरारुहं ।
जं संपत्ता न सोयंति भवोहंतकरा मुणी ॥

O Monk ! The place which is situated on the top of the cosmos is the eternal abode. It is very difficult to reach there. Those who have reached that place have no unhappiness. Their cycle of wordly existence comes to an end.

हे मुनि ! वह स्थान लोक के अग्रभाग में शाश्वत निवासरूप है । वहां पहुँच पाना बहुत कठिन है । उसे प्राप्त कर जीव दु:ख से मुक्त हो जाते हैं । उन के भव का अंत हो जाता है ।

હે મુનિ ! તે સ્થાન શાશ્વત નિવાસરૂપ છે. તે લોકના અગ્રભાગ ઉપર આવેલું છે. ત્યાં પહોંચવું ઘણું મુશ્કેલ છે. જેમણે એ સ્થાન પ્રાપ્ત કર્યું છે તેમને કોઈ દુ:ખ રહેતું નથી. તેઓના ભવનો અંત આવી જાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न रूय–लावण्ण–विलास–हासं
न जंपियं इंगिय पेहियं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता
दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥

A monk practising penance should not allow any thought about women's physique, beauty, gestures, smiles, sweet words, indications, glances, etc., to linger in his mind and should avoid seeing them.

तपस्वी साधु स्त्रियों के रूप, लावण्य, विलास, हास्य, मधुर आलाप, इंगित या नयनकटाक्ष का चित्त में चिंतवन न करे और उन्हें देखने का संकल्प न करे ।

તપસ્વી સાધુએ સ્ત્રીઓનાં રૂપ, લાવણ્ય, વિલાસ, હાસ્ય, મધુર વચન, ઇંગિત, નયનકટાક્ષ વગેરેના વિચારને પોતાના ચિત્તમાં સ્થિર ન થવા દેવો અને તેમને જોવાનો સંકલ્પ ન કરવો.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मलद्धं मियं काले जत्तत्थं पणिहाणवं ।
नाइमत्तं तु भुंजिज्जा बंभचेररओ सया ॥

A monk practising the vow of celibacy should always eat his food, collected according to the prescribed rules, in a limited quantity, at proper time, and with a peaceful mind. He should never eat too much.

ब्रह्मचर्य व्रत में रत रहने वाला मुनि साधुधर्म अनुसार सदा उचित समय में, भिक्षा द्वारा प्राप्त आहार, परिमित मात्रा में, स्वस्थ चित्त से ग्रहण करे और कभी भी अधिक न खाए ।

બ્રહ્મચર્ય વ્રતના ઉપાસક સાધુએ સાધુધર્મ અનુસાર સદા ભિક્ષા દ્વારા મેળવેલો આહાર પરિમિત માત્રામાં, યોગ્ય કાળે, સ્વસ્થ ચિત્તે ગ્રહણ કરવો. સાધુએ ક્યારેય પણ અધિક આહાર કરવો નહિ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुं खु मुणिणो भद्दं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ ॥

A monk who is free from all the wordly ties, who has realised that ultimately he is all alone, who has left his house for ever, and has decided to live only on alms, really experiences true happiness.

सर्व संबंधों से मुक्त, एकत्व भाव धारण करनेवाले, गृहस्थ–जीवन के त्यागी, भिक्षा से निर्वाह करनेवाले मुनि को बहुत सुख होता है ।

સર્વ બંધનોમાંથી મુક્ત થઈને, એકત્વ ભાવને અનુસરનાર, ગૃહસ્થજીવનને ત્યાગનાર, ભિક્ષાથી જીવનનિર્વાહ કરનાર મુનિને ખરેખર બહુ સુખ હોય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं देहवासं असुइं असासयं
सया चए निच्चहिअट्ठिअप्पा ।
छिंदित्तु जाईमरणस्स बंधणं
उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥

A monk who is keen on attaining eternal happiness of his soul and always ready to discard this impure and transitory physical body, cuts the bondage of birth and death and attains Moksha, from where there is no return.

अपनी आत्मा को शाश्वत हित में सदा सुस्थित रखनेवाला मुनि, अशुचिमय और अशाश्वत देहवास को सदा के लिए त्याग देता है और जन्म-मरण के बंधन को छेद कर अपुनरागमन-गति (मोक्ष) को प्राप्त होता है ।

પોતાના આત્માનું શાશ્વત હિત સાધવામાં સદા પ્રવૃત્ત રહેનાર મુનિ અશુચિમય અને અશાશ્વત એવા દેહવાસનો ત્યાગ કરવા હંમેશાં તત્પર રહે છે અને જન્મ-મરણનાં બંધનને છેદીને અપુનરાગમન-ગતિ (મોક્ષ)ને પામે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जई ॥

For a monk who has left his wife and children, and is above the material activities, there is nothing that is pleasant and there is nothing that is unpleasant.

पुत्र और स्त्री से मुक्त तथा सांसारिक व्यवहार से निवृत्त मुनि के लिए कोई भी वस्तु प्रिय नहीं होती और कोई भी वस्तु अप्रिय नहीं होती ।

સ્ત્રીપુત્રાદિકનો ત્યાગ કરનાર તથા સાંસારિક વ્યવહારથી પર થયેલા મુનિને માટે કશું પ્રિય નથી અને કશું અપ્રિય પણ નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न य वुग्गहियं कहं कहिज्जा
न य कुप्पे निहुइन्दिअ पसन्ते ।
संजमधुवजोगजुत्ते उवसंते
अविहेडए जे स भिक्खू ॥

A monk is one who never narrates such stories that would invite quarrels, who never gets angry, who always controls his senses, who firmly observes the rules of self–control, who is calm and never dis-regards others.

जो कलह करने वाली कथावार्ता नहीं करता, जो गुस्सा नहीं करता, जिस की इन्द्रियाँ संयम में हैं, जो मन, वचन और काया के योग-सहित संयम में निश्चल है, जो उपशान्त है और जो औरों का अनादर नहीं करता, वह भिक्षु है ।

સાધુ તે કહેવાય કે જે કલેશકંકાસ થાય તેવી કથાવાર્તા કરે નહિ, જે ગુસ્સો કરે નહિ, જે ઇન્દ્રિયોને સંયમમાં રાખનાર હોય, મન, વચન અને કાયાના જેના યોગો સંયમમાં નિશ્ચિતપણે જોડાયેલા હોય, જે ઉપશાંત હોય અને જે બીજાનો અનાદર કરતા ન હોય.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिंसं सच्चं च अतेणगं च
तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च ।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि
चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विदू ॥

A wise monk should accept the five great vows, viz. Non-violence, Truth, Non-stealing, Celibacy and Non-acquisition and he should always practise the religion as preached by the Jinas.

ज्ञानी मुनि अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह — इन पाँच महाव्रतों को अपनाकर जिनेश्वर - उपदिष्ट धर्म का आचरण करे ।

જ્ઞાની મુનિએ અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય અને અપરિગ્રહ–એ પાંચ મહાવ્રતોને અંગીકાર કરીને, જિનેશ્વર ભગવાને ઉપદેશેલા ધર્મનું આચરણ કરવું.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि
इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
तं एवमेवं लालप्पमाणं
हरा हरन्ति त्ति कहं पमाओ ॥

While a man keeps on prattling, `this is mine, this is not mine; I have done this; I have not done this', — the robbers (in the form of day and night) keep robbing him. How can one then be careless ?

'यह मेरा है और यह मेरा नहीं; यह मैंने किया है और यह मैंने नहीं किया ।' —इस प्रकार वृथा बकवास करते हुए मनुष्य को चोर (दिन और रात के रूप में) लूट रहे हैं । फिर प्रमाद क्यों किया जाये ?

'આ મારું છે, આ મારું નથી; આ મેં કર્યું છે, આ મેં કર્યું નથી.'—આ પ્રમાણે બડબડાટ કર્યા કરતા મનુષ્યને ચોરો (દિવસ અને રાત્રિરૂપી) લૂંટી રહ્યા છે. તો પછી શા માટે પ્રમાદ કરવો ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा किंपागफलाणं परिणामो न सुंदरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुंदरो ॥

Just as the result of eating the beautiful Kimpaka fruit is not good, similarly, the result of enjoying worldly pleasures is not good.

जिस प्रकार सुंदर किम्पाक फल खाने का परिणाम सुंदर नहीं होता, उसी प्रकार भोगे हुए भोगों का परिणाम भी सुंदर नहीं होता ।

જેમ કિંપાક નામનું સુંદર ફળ ખાવાનું પરિણામ સુંદર નથી હોતું, તેમ ભોગવેલા ભોગનું પરિણામ સુંદર નથી હોતું.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सल्लं कामा विसं कामा कामा आसीविसोपमा ।
कामे य पत्थेमाणा अकामा जन्ति दोग्गइं ॥

Material pleasure are like thorns. Material pleasures are like poison. Material pleasures are like a poisonous serpent. People seeking pleasures get into an unhappy state of rebirth, without getting any of the pleasures.

कामभोग शल्य है । कामभोग विष है । कामभोग आशीविष सर्प के तुल्य है । कामभोग की इच्छा करनेवाले, उन को बिना प्राप्त किये ही दुर्गति को प्राप्त होते हैं ।

કામભોગો શલ્ય છે. કામભોગો વિષ છે. કામભોગો ઝેરી સર્પ જેવા છે. કામભોગોની ઇચ્છા કરતા જીવો તેને પ્રાપ્ત કર્યા વિના જ દુર્ગતિમાં જાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ
न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति
दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥

Time flows on. Nights go by quicky. Human pleasures are not permanent. Just as birds abandon a tree the fruits of which are over, similarly pleasures forsake weak men.

काल गुज़र रहा है । रात्रियाँ दौड़ रही हैं । मनुष्यों के भोग भी नित्य नहीं हैं । जैसे क्षीण फल वाले वृक्ष को पक्षी छोड़ देते हैं, वैसे ही अशक्त मनुष्य को कामभोग छोड़ देते हैं ।

કાળ ચાલ્યો જાય છે. રાત્રિઓ વીતી જાય છે. મનુષ્યોના કામભોગ પણ નિત્ય નથી. ફળ ખરી ગયા પછી પક્ષીઓ જેમ વૃક્ષોને તજી દે છે તેમ કામભોગ પણ અશક્ત માણસને તજી દે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंखयं जीविय मा पमायए
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एवं विजाणाहि जणे पमत्ते
किण्णू विहिंसा अजया गहिन्ति ॥

Life once torn cannot be stitched up again. There is no protection against old age. Therefore, knowing this, do not be careless. Those who are careless, those who kill living beings and those who do not have self-control, whose refuge will they seek ?

तूटा हुआ जीवन साँधा नहीं जा सकता । बुढ़ापा आने पर कोई शरण नहीं होती । इस लिए प्रमाद मत करो । प्रमादी, हिंसा करनेवाले और असंयमी मनुष्य किस की शरण लेंगे ?

જીવન તૂટ્યા પછી સંધાય તેવું નથી. વૃદ્ધાવસ્થાથી ઘેરાયેલાનો બચાવ થઈ શકતો નથી, એમ જાણીને પ્રમાદ ન કરો. જેઓ પ્રમાદી છે, હિંસા કરનારા છે, સંયમ વિનાના છે તેઓ કોને શરણે જશે ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुल्लहे खलु माणुसे भवे
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं ।
गाढा य विवाग कम्मुणो
समयं गोयम । मा पमायए ॥

It is very difficult for all living beings to get human birth even after a very long time, because the results of Karmas are very hard. Therefore, O Gautama ! do not be careless even for a moment.

सर्व प्राणियों को, चिरकाल के बाद भी मनुष्य–जन्म मिलना दुर्लभ है क्यों कि कर्म के विपाक गाढ़ होते हैं । इस लिए हे गौतम ! तू समय मात्र का भी प्रमाद न कर ।

સર્વ જીવોને ઘણા લાંબા કાળે પણ મનુષ્યજન્મ મળવો દુર્લભ છે, કારણ કે કર્મનો વિપાક ગાઢ હોય છે. માટે હે ગૌતમ ! સમય માત્રનો પ્રમાદ ન કર.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इह जीवियमेव पासहा तरुणे वाससयस्स तुट्टई ।
इत्तरवासे य बुज्झह गिद्धनरा कामेसु मुच्छिया ॥

Look at human life in this world ! It may be over either early in youth or after a hundred years. You should know that this life is an abode for very short duration. However, the greedy people still remain engrossed in wordly pleasures.

इस संसार में मनुष्य-जीवन को देखो । वह तरुण अवस्था में या सो वर्ष के आयुष्य पर भी तूट जाता है । इस जीवन को कुछ दिनों का निवास समझो । फिर भी लोभी मनुष्य कामभोग में मूर्छित रहते हैं ।

આ સંસારમાં મનુષ્ય જીવનને જ જુઓ ! તે તરુણ અવસ્થામાં કે સો વર્ષના આયુષ્યમાં તૂટી જાય છે. આ જીવનને થોડા દિવસના નિવાસ જેવું સમજો. આમ છતાં, લોભી માણસો તો કામભોગમાં મૂર્છિત રહે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी
न वीससे पंडिए आसुपन्ने ।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं
भारंडपंखी व चरे ऽप्पमत्तो ॥

When ordinary people sleep in delusion, a wise person who remains watchful, will not put trust in carelessness. Time is horrible and the body is fragile. Therefore, you should move about carefully like a Bharanda bird.

मोहनिद्रा में सोये हुए लोगों के बीच भी जाग्रत रहने वाला बुद्धिमान पंडित, प्रमाद में विश्वास न करे । काल भयंकर है । शरीर निर्बल है । इस लिए तू भारंड पक्षी की भाँति अप्रमत्त होकर विचरण कर ।

મોહનિદ્રામાં સૂતેલાની વચ્ચે જાગૃત રહેનાર બુદ્ધિમાન પંડિત પ્રમાદનો વિશ્વાસ નહિ કરે. કાળ ભયંકર છે અને શરીર નિર્બળ છે એમ જાણીને તું ભારંડ પક્ષીની જેમ અપ્રમત્ત થઈને વિચરણ કર.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जावन्त ऽ विज्जापुरिसा सव्वे ते दुक्खसंभवा ।
लुप्पंति बहुसो मूढा संसारंमि अणंतए ॥

All those who have no knowledge are likely to suffer misery. Ignorant persons get afflicted again and again in this endless world.

जितने भी अविद्यावान मनुष्य हैं वे सब दु:खों के पात्र होते हैं । इस अनन्त संसार में वे मूढ़ मनुष्य बारबार पीडित होते हैं ।

જે કોઈ અજ્ઞાની મનુષ્યો છે તે સર્વ દુ:ખને પાત્ર હોય છે. આ અનંત સંસારમાં તે મૂઢ મનુષ્યો વારંવાર પીડિત થાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिणीयं च बुद्धाणं वाया अदुव कम्मुणा ।
आवी वा जइ वा रहस्से नेव कुज्जा कयाइ वि ॥

One should never act either by words or by deeds, either publicly or privately, in a manner which is not agreeable to wise men.

वचन से या कर्म से, प्रगट में या एकान्त में, ज्ञानी पुरुषों के प्रतिकूल आचरण कभी भी न करें ।

વચનથી કે કર્મથી, પ્રગટ રીતે કે એકાન્તમાં, જ્ઞાની પુરુષોને પ્રતિકૂળ એવું આચરણ ક્યારેય ન કરવું.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे केइ सरीरे सत्ता
वण्णे रूवे य सव्वसो ।
मणसा कायवक्केणं
सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥

All those who are totally attached to the body, complexion and beauty, in thought, words and deeds, are ultimately creating miseries for themselves.

जो मन, वचन और काया से, शरीर, वर्ण और रूप में सर्वशः आसक्त होते हैं वे सभी अपने लिए दुःख उत्पन्न करते हैं ।

જેઓ મન, વચન અને કાયાથી, શરીરમાં, વર્ણમાં અને રૂપમાં સર્વ પ્રકારે આસક્ત હોય છે તેઓ બધા પોતાને માટે દુઃખ ઉત્પન્ન કરે છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जरामरणवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं ।
धम्मो दीवो पइट्ठा य गई सरणमुत्तमं ॥

Religion itself is an island, a resting place, strength and the best shelter for living beings being swept away by forceful currents in the form of old age and death.

जरा और मृत्युरूपी जलप्रवाह में वेग से बहते हुए प्राणियों के लिए धर्म ही द्वीप, प्रतिष्ठान (आश्रयस्थान), गति और उत्तम शरण है ।

વૃદ્ધાવસ્થા અને મૃત્યુરૂપી જલપ્રવાહમાં ઘસડાતા જીવો માટે ધર્મ જ દ્વીપ, પ્રતિષ્ઠાન (આશ્રયસ્થાન), ગતિ અને ઉત્તમ શરણરૂપ છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कसाया अग्गिणो वुत्ता सुयसीलतवो जलं ।
सुयधाराभिहया संता भिन्ना हु न डहंति मे ॥

Passions (anger, ego, deceit and greed) are called fire. Knowledge, self-control and penance are called water. The flames of fire do not burn me because they are showered with the water of scriptural study.

कषाय (क्रोध, मान, माया और लोभ) को अग्नि कहा गया है । श्रुत, शील और तप जल हैं । श्रुतरूपी जल की धारा से छिड़के जाने के कारण शीत और छिन्न-भिन्न हुई वे ज्वालाएँ मुझे नहीं जलातीं ।

કષાયો (ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ)ને અગ્નિ કહેવામાં આવે છે. શ્રુત, શીલ અને તપને જલ કહેવામાં આવે છે. શ્રુતરૂપી જલની ધારા છાંટવાથી ઠંડી પડી ગયેલી અને છિન્નભિન્ન થયેલી તે જ્વાળાઓ મને દઝાડતી નથી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो ।
समो अ सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ॥

A monk should be free from possessiveness, ego, companionship and attachment. He should treat all living beings, whether animate or inanimate with equanimity.

साधु ममत्व–रहित, अहंकार–रहित, निस्संग, और गारव (आसक्ति) का त्यागी होता है । वह त्रस और स्थावर सभी जीवों में समभाव रखनेवाला होता है ।

સાધુ મમત્વરહિત, નિરભિમાની, નિ:સંગ અને ગારવ (આસક્તિ)ના ત્યાગી હોવા જોઈએ. તે ત્રસ અને સ્થાવર એવા તમામ જીવો પ્રત્યે સમભાવ ધારણ કરનાર હોવા જોઈએ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा ।
समो निंदापसंसासु तहा माणावमाणओ ॥

A monk should maintain equanimity on the occasions of gain or loss, happiness or misery, life or death, censure or praise and honour or dishonour.

लाभ–अलाभ, सुख–दु:ख, जीवन–मरण, निंदा–प्रशंसा और मान–अपमान के प्रसंग में मुनि समत्व धारण करे ।

લાભ–અલાભ, સુખ–દુ:ખ, જીવન–મરણ, નિંદા–પ્રશંસા અને માન–અપમાનના પ્રસંગોમાં મુનિએ સમત્વ ધારણ કરવું.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पंडुरया हवंति ते ।
से सोयबले य हायई
समयं गोयम । मा पमायए ॥

Your body is decaying. Your hair is becoming grey. Your strength of hearing is decreasing. Therefore, O Gautama ! do not be careless even for a moment.

तेरा शरीर जीर्ण हो रहा है । तेरे केश सफेद होते जा रहे हैं । तेरे श्रोत्र का बल क्षीण हो रहा है । इस लिए हे गौतम ! तू समय मात्र के लिए भी प्रमाद न कर ।

તારું શરીર જીર્ણ થવા લાગ્યું છે. તારા કેશ ધોળા થઈ રહ્યા છે. તારું શ્રોત્રબળ પણ ઘટી રહ્યું છે. માટે હે ગૌતમ ! તું સમય માત્રનો પ્રમાદ ન કર.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अबले जह भारवहए
मा मग्गे विसमे वगाहिया ।
पच्छा पच्छाणुतावए
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

A weak person carrying a heavy burden repents for taking an uneven road. Similarly, you will repent if you choose a wrong path. Therefore, O Gautama ! do not be careless even for a moment.

निर्बल भारवाहक की भाँति विषम मार्ग में मत जा, क्योंकि विषम मार्ग में जानेवाला बाद में पछताता है । इस लिए हे गौतम ! तू समय मात्र के लिए भी प्रमाद न कर ।

નિર્બળ ભારવાહકની જેમ તું વિષમ માર્ગમાં ન જા. વિષમ માર્ગમાં જનારને પછીથી પસ્તાવું પડે છે. માટે હે ગૌતમ ! તું સમય માત્રનો પ્રમાદ ન કર.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुसग्गे जह ओसबिन्दुए
थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए ।
एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम । मा पमायए ॥

A drop of a dew remains suspended on the tip of a blade of grass just for a moment. Human life is also like that. Therefore, O Gautama ! do not be careless even for a moment.

कुश की नोक पर लटकता हुआ ओस-बिन्दु थोडी ही देर टिकता है; वैसा ही मनुष्य जीवन भी है । इस लिए हे गौतम ! तू समय मात्र के लिए भी प्रमाद न कर ।

ડાભના અગ્રભાગ પર લટકીને રહેલું ઝાકળનું બિંદુ થોડી વાર જ ટકી શકે છે. એવી રીતે મનુષ્યોના જીવનનું પણ છે. માટે હે ગૌતમ ! તું સમય માત્રનો પ્રમાદ ન કર.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिण्णो हु सि अण्णवं महं
किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
अभितुर पारं गमित्तए
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

You have nearly crossed the great ocean. Why are you then standing, having reached the shore ? Be quick to cross over it. O Gautama ! do not be careless even for a moment.

तू महान समुद्र को पार कर गया । अब किनारे आ कर क्यों खड़ा है ? उस पार पहुँचने के लिए जल्दी कर । हे गौतम ! तू समय मात्र के लिए भी प्रमाद न कर ।

તું મહાસાગરને તરી જવા આવ્યો છે, તો પછી કિનારા પાસે પહોંચીને હવે કેમ ઊભો છે ? તું સામે પાર પહોંચવા માટે ઉતાવળ કર. હે ગૌતમ ! તું સમય માત્રનો પ્રમાદ ન કર.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समं च संथवं थीहिं संकहं च अभिक्खणं ।
बंभचेर रओ भिक्खू णिच्चसो परिवज्जए ॥

A monk interested in observing celibacy should always avoid the company of women and also frequent conversation with them.

ब्रह्मचर्य में रत रहने वाला साधु स्त्रियों के साथ परिचय का और बारबार वार्तालाप का सदा त्याग करे ।

બ્રહ્મચર્યની સાધના કરનાર સાધુએ સ્ત્રીઓ સાથેના પરિચયનો અને તેમની સાથે વારંવાર વાર્તાલાપ કરવાનો હંમેશાં ત્યાગ કરવો.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई ।
भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चई ॥

There is stickiness in pleasures. One who is not after pleasures does not get stuck up. A pleasure-seeker wanders in the wordly life. One who renounces pleasures gets liberated.

भोगों में उपलेप होता है । अभोगी लिप्त नहि होता । भोगी संसार में भ्रमण करता है । अभोगी संसार से विमुक्त हो जाता है ।

ભોગોમાં લેપાવાનું હોય છે. અભોગી લેપાતો નથી. ભોગી સંસારમાં ભમે છે. અભોગી સંસારથી વિમુક્ત થઈ જાય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लद्धूण वि उत्तमं सुइं सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा ।
मिच्छत्त निसेवए जणे समयं गोयम मा पमायए ॥

Even after getting the knowledge of best religion, it is very difficult to have firm faith in it. Most of the people have wrong belief. Therefore O Gautam ! do not be careless even for a moment.

उत्तम धर्म का श्रवण करने पर भी उस में श्रद्धा होना अधिक दुर्लभ है । बहुत सारे लोग मिथ्यात्व का सेवन करने वाले होते हैं । इस लिए हे गौतम ! तू समय मात्र के लिए प्रमाद न कर ।

ઉત્તમ ધર્મનું શ્રવણ કરવા છતાં એમાં શ્રદ્ધા થવી બહુ દુર્લભ છે. ઘણા લોકો મિથ્યાત્વનું સેવન કરનારા હોય છે. માટે હે ગૌતમ ! તું સમય માત્રનો પ્રમાદ ન કર.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं भवसंसारे संसरइ सुभासुभेहिं कम्मेहिं ।
जीवो पमायबहुलो समयं गोयम मा पमायए ॥

Thus a living being, full of carelessness, moves in this world of life and death according to his good or bad deeds. Therefore O Gautam ! do not be careless even for a moment.

इसी प्रकार प्रमाद से भरा हुआ जीव शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार भव रुप संसार में भ्रमण करता है । इस लिए हे गौतम । तू समय मात्र के लिए प्रमाद न कर ।

એવી રીતે પ્રમાદથી ભરેલો જીવ ભવરૂપી સંસારમાં શુભ અને અશુભ કર્મો અનુસાર ભ્રમણ કરે છે. માટે હે ગૌતમ ! તું સમય માત્રનો પ્રમાદ ન કર.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Six Leśyās

Traditional Illustration
Of Jāmbu - Fruit Eaters

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org